सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 147 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शनिवार 4 जुलाई, 2026
मूल्य ₹ 3/-

लम्बे समय तक नाराज रहने के लिए जिन्दगी बहुत छोटी है।
-इलोन मस्क

भारत और इंग्लैंड के बीच दूसरा... 7 | यमुना नदी के जल बंटवारे समझौत... 3 | चढ़ावा चोरी में बड़े लोगों को छोड़... 2

राम मंदिर दान चोरी प्रकरण को मुद्दा बनाएगी कांग्रेस

दिग्विजय सिंह करेंगे पदयात्रा

» दिग्विजय सिंह की राम रणनीति कांग्रेस-बीजेपी किसको होगा फायदा?

» 2 अक्टूबर से महाकाल-अयोध्या पदयात्रा पर निकलेंगे दिग्विजय सिंह राम मंदिर के लिए दिए दान का मागेंगे हिसाब

» नेपथ्य से मंच तक राम पथ से वापसी की राह तलाश रहे हैं दिग्विजय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने घोषणा की है कि वह राम मंदिर निर्माण चंदा घोटाला मामले में पदयात्रा करेंगे। उनकी पदयात्रा की शुरूआत 2 अक्टूबर से उज्जैन के महाकाल मंदिर से होगी और अयोध्या में खत्म होगी।

उनका दावा है कि यह एक गैरराजनीतिक पदयात्रा होगी। उन्होंने यह भी कहा है कि राम मंदिर निर्माण के लिए दिए गए अपने दान का हिसाब मांगने के लिए वह अदालत का दरवाजा भी खटखटाएंगे। उनका कहना है कि यह राजनीति नहीं बल्कि श्रद्धालुओं की आस्था से जुड़ा विषय है। उन्होंने यह घोषणा ऐसे वक्त में कि है जब कांग्रेस मुख्यमंत्री मोहन यादव के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार पर उज्जैन में सरकारी जमीन आवंटन को लेकर गंभीर आरोप लगा रही है। वंही इस मुद्दे पर कांग्रेस की राज्य इकाईयों से भी भाजपा को घेरने की आवाजें सुनाई दे रही हैं। राजस्थान में अशोक गहलोत पहले ही इसकी जांच की मांग कर चुके हैं। यूपी कांग्रेस अध्यक्ष तो अयोध्या का दौरा भी कर चुके है जिसके तहत उन्हें हाउस अरेस्ट भी होना पड़ा।

भक्तों को धन का उपयोग कैसे किया गया जानने का अधिकार

भोपाल में मध्य प्रदेश महिला कांग्रेस द्वारा आयोजित सद्बुद्धि यज्ञ और सामूहिक उपवास कार्यक्रम में बोलते हुए दिग्विजय सिंह ने कहा कि करोड़ों श्रद्धालुओं ने आस्था के साथ राम मंदिर के लिए दान दिया था और उन्हें यह जानने का अधिकार है कि उस धन का उपयोग कैसे किया गया? उन्होंने कहा कि लोगों ने भगवान राम के नाम पर पूरी श्रद्धा के साथ दान दिया। यदि उस धन का दुरुपयोग हुआ है तो निष्पक्ष जांच होनी चाहिए और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए। दिग्विजय सिंह ने कहा कि धार्मिक दान से जुड़े संस्थानों को श्रद्धालुओं के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। उन्होंने यह भी घोषणा की कि वह अपने घर के बाहर एक और पट्टिका लगाएंगे जिस पर लिखा होगा दान चोरों का मेरे घर में प्रवेश वर्जित है।

कांग्रेस के भीतर मतभेद

उनकी यह घोषणा ऐसे समय में आई है जब प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी मुख्यमंत्री मोहन यादव पर उज्जैन में एक ट्रस्ट को बेहद कम कीमत पर सरकारी जमीन देने का आरोप लगा रहे हैं। भाजपा इन आरोपों से इनकार कर चुकी है। इस मुद्दे पर कांग्रेस के भीतर भी मतभेद सामने आए हैं। दिग्विजय सिंह ने सार्वजनिक रूप से जीतू पटवारी के आरोपों पर सवाल उठाते हुए कहा था कि उनके पास मौजूद दस्तावेजों के अनुसार संबंधित ट्रस्ट कोई निजी संस्था नहीं बल्कि सरकारी इकाई है। ऐसे माहौल में महाकाल से अयोध्या तक पदयात्रा निकालने और राम मंदिर के दान को लेकर कानूनी कार्रवाई करने का दिग्विजय सिंह का फैसला मध्य प्रदेश की राजनीति में नई बहस को जन्म दे सकता है।

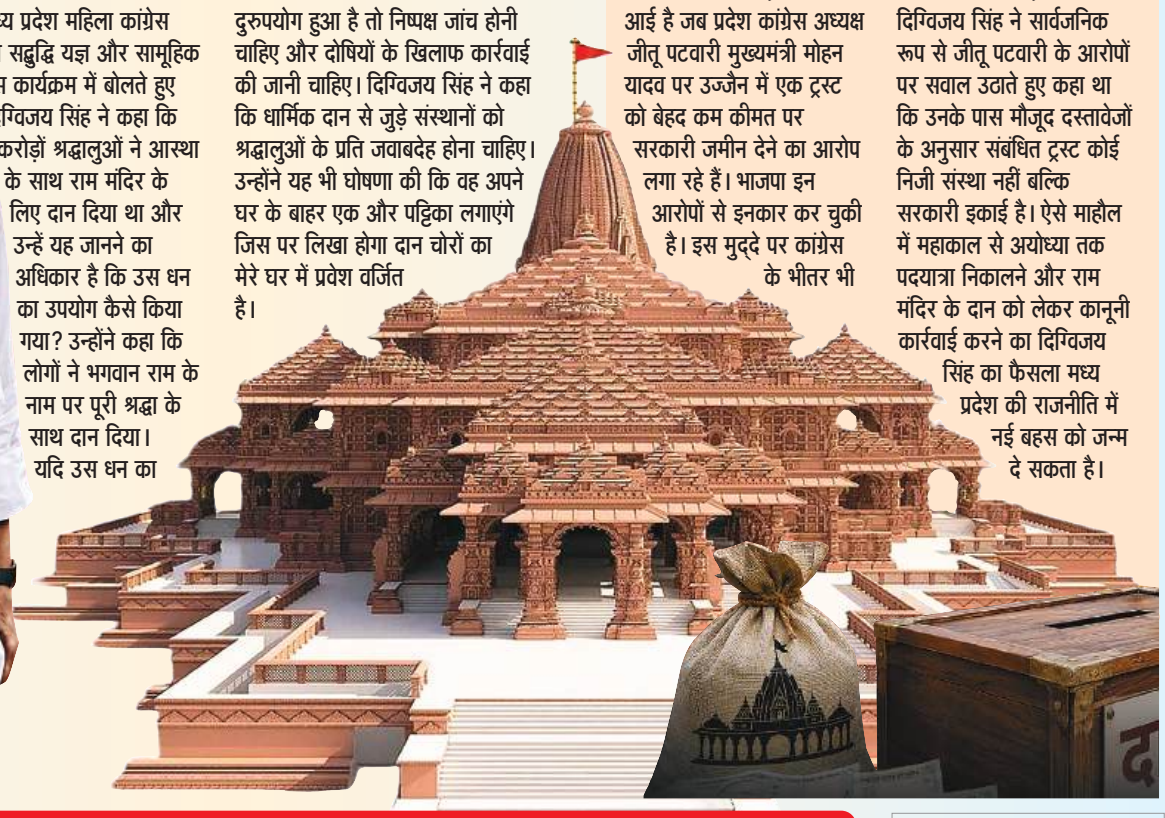

पदयात्रा और कानूनी लड़ाई दोनों लड़ेंगे दिग्विजय सिंह

दिग्विजय सिंह ने कहा है कि वह अयोध्या में अदालत में एक मामला भी दायर करेंगे और यह जानकारी मांगेंगे कि राम मंदिर के लिए मिले दान का उपयोग किस प्रकार किया गया। उनकी यह घोषणा ऐसे समय में आई है जब राम मंदिर में दान और कीमती सामान की चोरी के आरोपों की जांच एसआईटी कर रहा है। भोपाल स्थित अपने आवास के बाहर भगवान राम को चढ़ाए गए चढ़ावे और दान की चोरी करने वालों का प्रवेश वर्जित है लिखा बैनर लगाने के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए दिग्विजय सिंह ने कहा कि कोई भी उनकी धार्मिक आस्था पर सवाल नहीं उठा सकता। उन्होंने कहा कि मैं सनातन धर्म का सच्चा अनुयायी हूं। मेरा पैतृक स्थान राघौगढ़ है जहां भगवान राघव, हनुमान जी, माता और जगदीश स्वामी के प्राचीन मंदिर पीढ़ियों से मौजूद हैं। वहां चौबीसों घंटे दीपक जलते हैं। मेरी आस्था पर कोई सवाल नहीं उठा सकता। दिग्विजय सिंह ने कहा है कि राम मंदिर निर्माण के लिए 1.11 लाख रुपए का दान दिया था और आज भी उनके पास उसकी रसीद और चेक की प्रति सुरक्षित है।

जुलाई से कानूनी लड़ाई, अक्टूबर में होगी पदयात्रा

पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के मुताबिक वह 5 या 6 जुलाई को अपने वरिष्ठ वकील से सलाह लेने के बाद अयोध्या पहुंचेगे और वहां की अदालत में वाद दायर करेंगें। उन्होंने कहा कि यदि अदालत को दान के उपयोग में वित्तीय गड़बड़ी मिलती है तो वह अपना दान वापस मांगेंगे और उसे किसी अन्य मान्यता प्राप्त धार्मिक संस्था या शंकराचार्य से जुड़े किसी ट्रस्ट को दान कर देंगे।

चढ़ावा चोरी में बड़े लोगों को छोड़ छोटों को फंसाया जा रहा है : अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख बोले- पूरे मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राम मंदिर चढ़ावा चोरी विवाद पर विपक्ष का भाजपा का प्रहार जारी है। चोरी के आरोप में टिन्नू यादव पुलिस गिरफ्त में हैं। इस बीच उनके भाई ने टिन्नू को फंसाने का आरोप लगाया है। ऐसे में सपा चीफ अखिलेश यादव अब टिन्नू यादव का समर्थन में बोले हैं। सपा चीफ अखिलेश यादव ने एक्स पर पोस्ट में तंज कसते हुए लिखा, फुनगी को फांसी, शाख को माफी।

बता दें कि राम मंदिर चढ़ावा चोरी पर आरोपी टिन्नू यादव के भाई दिनेश यादव ने कहा कि बड़े लोग खुद को बचाने के लिए छोटे लोगों को फंसा रहे हैं। सपा मुखिया अखिलेश ने टिन्नू को निर्दोष बताते हुए कहा कि चंपत राय और अनिल मिश्रा ने फंसाया है। उन्होंने आगे कहा कि पूरे मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। टिन्नू राम मंदिर में सेवा दे रहे थे, उन्होंने कोई चोरी नहीं की है। राम मंदिर में चढ़ावे और दान की कथित हेराफेरी के मामले में गिरफ्तार आठों आरोपियों के घरों पर रविवार को पुलिस ने तलाशी अभियान चलाया। प्रारंभिक जांच में प्रत्येक आरोपी की अलग-अलग स्तर पर भूमिका सामने आई है।

खास तौर पर रामशंकर यादव उर्फ टिन्नू यादव की भूमिका जांच एजेंसियों के विशेष रडार पर है। छापेमारी के दौरान टिन्नू यादव की पड़ोसी तारा देवी ने कहा, यहां पुलिस की कार्रवाई हुई है. टिन्नू यादव अच्छे व्यक्ति थे। उनके ऊपर बिल्कुल गलत आरोप लगाए जा रहे हैं. उन्हें फंसाया जा रहा है।

सैफई में मंदिर बनने के बाद अखिलेश यादव अयोध्या जाएंगे

वहीं सपा सांसद ने अखिलेश यादव द्वारा राम मंदिर दर्शन को लेकर स्पष्ट किया कि अखिलेश यादव राम मंदिर जाएंगे, लेकिन उन्होंने प्रण किया है कि सैफई में जो मंदिर बन रहा है, जो कि 75 परसेंट पूरा हो चुका है. उन्होंने आगे बताया कि अखिलेश यादव मंदिर पूरा होने के तुरंत बाद राम मंदिर जाएंगे। राम के प्रति अखिलेश यादव और उनके पूरे परिवार की आस्था है।

बीजेपी में खुश नहीं हैं अरुण गोविल : सनातन पांडेय

उत्तर प्रदेश के बलिया से सपा सांसद सनातन पांडेय ने मेरठ से भाजपा सांसद अरुण गोविल को मंत्री बनाए जाने और राम मंदिर के अपमान के डैमेज कंट्रोल किए जाने पर बड़ा बयान दे दिया है। उन्होंने कहा कि

अरुण गोविल हमारे मित्र है, वो हमारी कमेटी में भी है. वो अपने राजनीतिक जीवन से संतुष्ट नही है. क्योंकि अंदर की बात को बाहर नहीं की जा सकती है. अरुण गोविल को मंत्रालय दे करके इस डैमेज को समाप्त नही किया जा सकता है। सपा सांसद के इस बयान के बाद कयास लगने शुरू हो गए हैं कि क्या सांसद अरुण गोविल भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) में खुश नहीं हैं. फिलहाल सपा सांसद सनातन पांडेय के बयान से सियासी हलचल पैदा हो है।

मंदिर में चोरी मतलब भारत भी सुरक्षित नहीं

सपा सांसद ने कहा कि भारत के बाहर के मुल्क भी कह रहे है कि जिससे हमारी आस्था जुड़ी है उसमें भी अगर घोटाला हो सकता है, चोरी हो सकती है तो इसका मतलब भारत भी सुरक्षित नहीं है। सांसद ने कहा कि हम भगवान से प्रार्थना करते है कि इसकी निष्पक्ष जांच हो. चंपत राय ने अपने पद से इस्तीफा नहीं दिया है। उनको कबूल करना प ेगा कि चोरी में मेरी संलिप्ता थी. सपा सांसद ने कहा कि अगर उत्तर प्रदेश सरकार और भारत सरकार इसकी निष्पक्ष जांच नहीं कराती है तो यह मान लिया जाएगा कि चंदा चोरी में उत्तर प्रदेश और केंद्र की सरकार भी शामिल है।

चंपत और अनिल मिश्रा पर सवाल

मामले में लगातार जांच जैसे-जैसे आगे बढ़ रही है. वैसे ही नए खुलासे हो रहे हैं। विवाद के बीच राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय और अनिल मिश्रा ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया था, हालांकि विपक्ष लगातार सवाल खड़े कर रहा है।

शहर और गांव के लोगों को आपस में बांटने की राजनीति कर रही भाजपा : अभय सिंह

» इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष बोले पानी नहीं देना चाहती है सैनी सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी अभय सिंह चौटाला ने कहा कि वह 5 जुलाई को हजारों कार्यकर्ताओं के साथ चनौत गांव पहुंचेंगे। भाजपा सरकार चनौत गांव को पानी नहीं देना चाहती है और इस मुद्दे की आड़ में शहर और गांव के लोगों को आपस में बांटने की राजनीति कर रही है। चंडीगढ़ स्थित पार्टी कार्यालय में पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने बताया कि 5 जुलाई को दोपहर 12 बजे चनौत का दौरा करने के बाद दोपहर 2 बजे हिसार में पार्टी की राष्ट्रीय और राज्य कार्यकारिणी की बैठक होगी। इसमें 25 सितंबर को मनाए जाने वाले चौधरी देवीलाल सम्मान दिवस की तैयारियों पर चर्चा होगी।

चौटाला ने कहा कि सरकार को ग्रामीणों की बात सुनकर समाधान निकालना चाहिए। उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि यदि उस लाइन से पानी नहीं देना था तो पाइप लाइन पर टी क्यों लगाई गई, फिर उसे किसके आदेश पर हटाया गया, टी हटाने वालों के नाम सार्वजनिक क्यों नहीं किए गए और 1500 ग्रामीणों पर मामले क्यों दर्ज किए गए। चौटाला ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री नायब सैनी के निर्देश पर टी लगाई गई और पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल के आदेश पर हटाई गई। अभय चौटाला ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को पत्र लिखकर कांग्रेस के खिलाफ पहले दी गई 20 पेज की चार्जशीट, भाजपा सरकार के दौरान हुए 20 से अधिक घोटालों, सीडी कांड व स्वास्थ्य विभाग में सामने आए 300 करोड़ रुपये के घोटाले की हाईकोर्ट के सिटिंग जज से जांच कराने की मांग की है। एसवाईएल और राजस्थान को पानी देने के मुद्दे पर कहा कि जब तक हरियाणा को उसका एसवाईएल का पानी नहीं मिलता तब तक राज्य का पानी किसी अन्य को नहीं दिया जाना चाहिए।

सीएम की चुप्पी नेताओं को बेशर्म बना रही : राज ठाकरे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) प्रमुख राज ठाकरे ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को एक्स पर एक ओपन लेटर लिखा है। इस लेटर में उन्होंने राज्य की मौजूदा राजनीतिक स्थिति पर चिंता जताई है और सत्ता पक्ष के नेताओं के व्यवहार पर सवाल उठाएं हैं। उन्होंने अपने लेटर में कहा है कि केंद्र की सत्ता में बैठे बीजेपी के नेता का अहंकार बढ़ गया है और यह बात पूरा देश खुलकर कह रहा है, अब इसका प्रभाव महाराष्ट्र में भी देखने को मिल रहा है।

राज ठाकरे ने फडणवीस को घेरते हुए कहा कि पूरे देश से अलग महाराष्ट्र के नेताओं की समझदारी, शालीनता और राजनीतिक संस्कृति की हमेशा सराहना की जाती रही है, लेकिन पिछले कुछ सालों में आपने भी कुछ पिछड़े सोच वाले उत्तर के राज्यों की राजनीति का रास्ता अपना लिया है. उन्होंने बीजेपी अध्यक्ष अमित साटम से जुड़े विवाद पर लिखा कि देवेंद्र फडणवीस की चुप्पी नेताओं को बेशर्म बना रही है। राज ठाकर ने देवेंद्र फडणवीस पर सवाल दागे और लिखा, सेंट्रल लीडर अपनी मनमानी कर रहा है और इसके खिलाफ गुस्सा लोगों में बढ़ रहा है।

देश को प्रयोगशाला बनाकर लोगों पर थोपा जा रहा फैसला : केजरीवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने पेट्रोल में 20 प्रतिशत इथेनॉल (ई-20) मिश्रण को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार पूरे देश को प्रयोगशाला बनाकर लोगों पर जबरदस्ती ई-20 पेट्रोल थोप रही है। इससे वाहनों का माइलेज कम हो रहा है, इंजन और अन्य पुर्जों को नुकसान पहुंच रहा है।

केजरीवाल ने कहा कि केंद्र ने 30 जून को सुप्रीम कोर्ट में अटॉर्नी जनरल के जरिए ई-20 पेट्रोल को एक प्रयोग बताया था, लेकिन बाद में इस बयान से पीछे हट गई। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट की कार्यवाही का एक वीडियो क्लिप साझा करते हुए कहा कि अगर यह वास्तव में प्रयोग है तो इसे पहले सीमित संख्या में वाहनों पर लागू किया जाना चाहिए था। केजरीवाल ने कहा कि देशभर से लोगों की शिकायतें मिल रहीं हैं कि ई-20 पेट्रोल के इस्तेमाल से वाहनों का माइलेज करीब 30 प्रतिशत तक कम हो रहा है। अगर माइलेज में इतनी कमी आ रही है तो इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल की कीमत भी उसी अनुपात में कम की जानी चाहिए। आप प्रमुख ने यह भी दावा किया कि कई वाहन मालिक इंजन, रबर पार्ट्स और अन्य पुर्जों के खराब होने व इंजन में जंग लगने जैसी समस्याओं की शिकायत कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि यदि सरकार इस नीति को प्रयोग मानती है तो प्रभावित लोगों को होने वाले नुकसान की जिम्मेदारी भी तय की जानी चाहिए। केजरीवाल ने भारत पेट्रोलियम के एक वरिष्ठ अधिकारी के कथित बयान का हवाला देते हुए कहा कि इथेनॉल की ऊर्जा क्षमता कम होने के कारण माइलेज पर असर पड़ना स्वाभाविक है। उन्होंने कहा कि सरकार जनता की चिंताओं को नजरअंदाज करने के बजाय उनकी बात सुने और इस फैसले पर पुनर्विचार करे।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

ममता बनर्जी को एक और बड़ा झटका

बंगाल टीएमसी चीफ चंद्रिमा भट्टाचार्य ने सभी पदों से दिया इस्तीफा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) प्रमुख ममता बनर्जी को बड़ा राजनीतिक झटका लगा है। उनकी करीबी मानी जाने वाली और बंगाल टीएमसी की प्रदेश अध्यक्ष चंद्रिमा भट्टाचार्य ने पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने ममता बनर्जी को पत्र लिखकर न केवल प्रदेश अध्यक्ष पद छोड़ा, बल्कि पार्टी और उससे जुड़े सभी अन्य दायित्वों से भी खुद को अलग कर लिया।

चंद्रिमा भट्टाचार्य ने अपने इस्तीफे में लिखा कि वह 3 जून 26 को कालीघाट में हुई बैठक में उन्हें सौंपे गए ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस के राज्य अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे रही हैं। इसके साथ ही उन्होंने पार्टी में वर्तमान में संभाल रहे सभी अन्य पदों से भी त्यागपत्र देने की घोषणा की। अपने पत्र में उन्होंने स्पष्ट किया कि वह ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस और उससे जुड़े अन्य संगठनों के विभिन्न बैंकों में संचालित खातों की अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता (ऑथराइज्ड सिग्नेटरी) के रूप में अपनी जिम्मेदारी भी वापस ले रही हैं।

चंद्रिमा भट्टाचार्य ने यह भी कहा कि वह अब ममता बनर्जी की ओर से भारत निर्वाचन आयोग के समक्ष अधिकृत प्रतिनिधि (ऑथराइज्ड पर्सन) के रूप में भी कार्य नहीं करेंगी। उन्होंने पत्र में इस संबंध में अपनी सहमति वापस लेने की बात कही है।

इस्तीफे की वजह का नहीं किया खुलासा

हालांकि, चंद्रिमा भट्टाचार्य ने अपने इस्तीफे में किसी भी कारण का जिक्र नहीं किया है। उनके अचानक सभी पदों से हटने के फैसले ने पश्चिम बंगाल की राजनीति में हलचल तेज कर दी है। फिलहाल तृणमूल कांग्रेस की ओर से इस इस्तीफे पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है।

यमुना नदी के जल बंटवारे समझौते पर सियासत

राजस्थान और हरियाणा के बीच हुआ नया समझौता

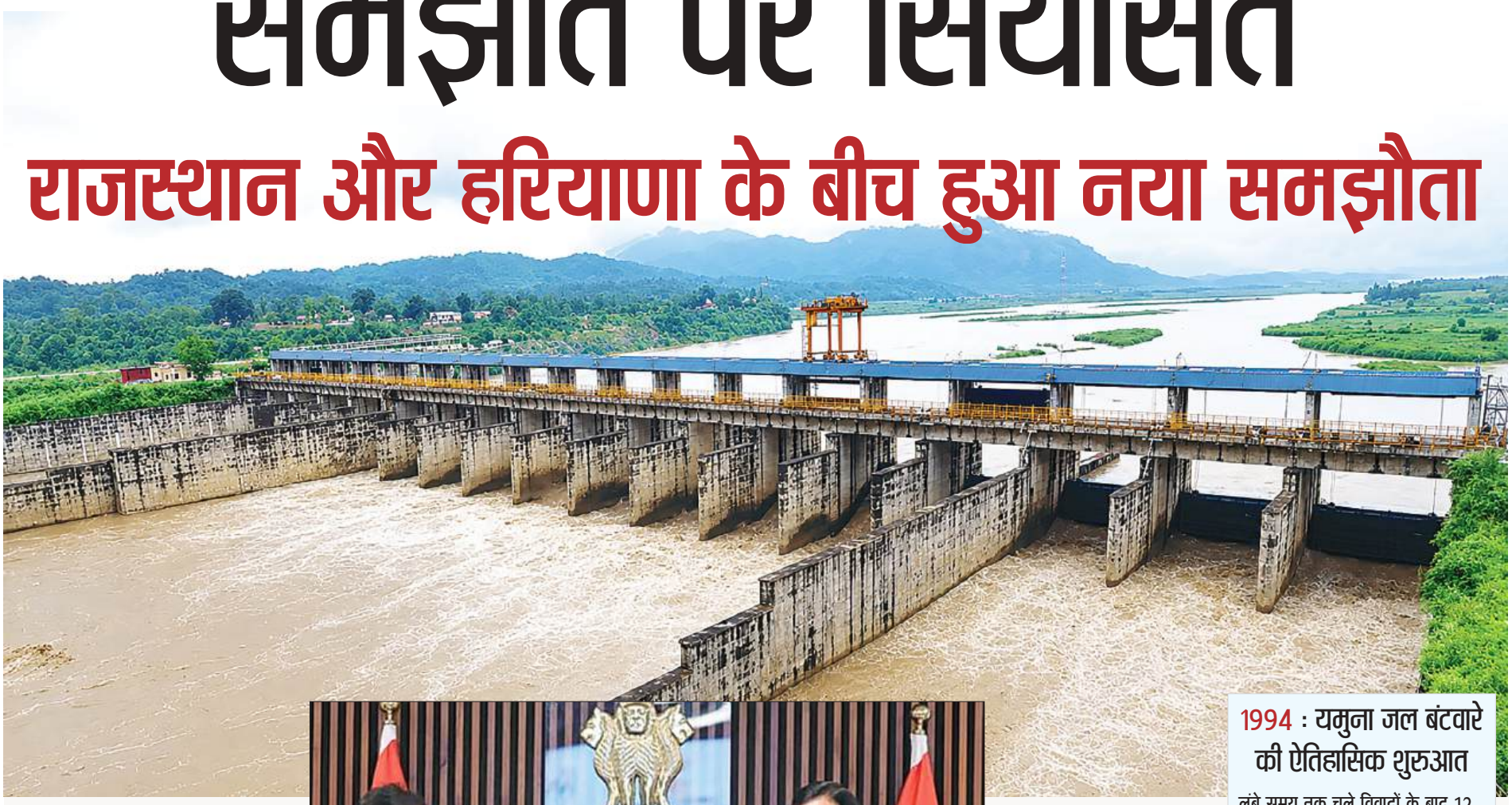

» कांग्रेस व भाजपा में वार-पलटवार

» तीन दशक पुरानी उम्मीदों को नई दिशा मिलने की आस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। एक समझौता जो कई सालों से लटका हुआ था पर दो सरकारों की आपसी सहमति से हो गया। पर उसके होने के बाद से सियासी मचमच भी शुरू हो गई है। जहां सत्ता में बैठी भाजपा इसका गुणगान कर रही है वहीं कांग्रेस इसे छलावा बता रही है। बता दें यमुना नदी के जल बंटवारे को लेकर राजस्थान और हरियाणा के बीच हुए नए समझौते ने तीन दशक पुरानी उम्मीदों को नई दिशा दी है। जहां सरकार इसे ऐतिहासिक उपलब्धि बता रही है, वहीं कांग्रेस समझौते की शर्तों को सार्वजनिक करने की मांग कर रही है।

तीन दशकों के लंबे इंतजार और कई प्रशासनिक पड़ावों से गुजरने के बाद आखिरकार यमुना नदी के जल बंटवारे को लेकर राजस्थान और हरियाणा के बीच एक नया और ऐतिहासिक अध्याय शुरू हो गया है। सोमवार को नई दिल्ली के कर्तव्य भवन में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में दोनों राज्यों के बीच एक महत्वपूर्ण मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (MoA) पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते से जहां राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र (चूरू, सीकर और झुंझुनूं) की दशकों पुरानी प्यास बुझने की उम्मीद जगी है, वहीं इस पर प्रदेश में सियासत भी गरमा गई है। पेश है यमुना जल समझौते का पूरा इतिहास, नया प्रशासनिक ढांचा और इस पर हो रही राजनीति की मुकम्मल रिपोर्ट।

1994 : यमुना जल बंटवारे की ऐतिहासिक शुरुआत

लंबे समय तक चले विवादों के बाद 12 मई 1994 को हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली (एनसीटी) के बीच यमुना जल बंटवारे को लेकर ऐतिहासिक समझौता (MoU) हुआ। इसमें तय किया गया कि यमुना नदी के उपयोग योग्य जल का बंटवारा सभी राज्यों की जरूरतों के अनुसार किया जाएगा।

1994 समझौते के अनुसार वार्षिक जल आवंटन

कुल उपयोग योग्य जल: 11.983 बिलियन क्यूबिक मीटर- हरियाणा - 5.7300, उत्तर प्रदेश - 4.032 राजस्थान - 1.119, दिल्ली - 0.724 हिमाचल प्रदेश -0.378 बाद में 6 जुलाई 2012 को अपर यमुना रिवर बोर्ड की 42वीं बैठक में जल उपलब्धता के अनुसार चार-चार महीने के तीन सीजन के आधार पर जल वितरण की नई व्यवस्था भी स्वीकृत की गई।

1995 : बोर्ड और समीक्षा समिति का गठन

इस समझौते को लागू करने और राज्यों के बीच समन्वय बनाए रखने के लिए 11 मार्च 1995 को केंद्र सरकार के जल संसाधन मंत्रालय ने दो प्रमुख निकायों का गठन किया—अपर यमुना रिवर बोर्ड राज्यों को निर्धारित मात्रा में पानी उपलब्ध कराना और जल प्रवाह का नियमन करना। अपर यमुना रिविजन कमेटी: केंद्रीय जल मंत्री की अध्यक्षता वाली उच्चस्तरीय समिति, जिसमें संबंधित राज्यों के मुख्यमंत्री सदस्य होते हैं। यह समिति बोर्ड के कार्यों की समीक्षा करती है और महत्वपूर्ण निर्णय लेती है।

हरियाणा के भी 10 स्थानों पर पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित होगी

परियोजना के निर्माण और संचालन के लिए राजस्थान-हरियाणा यमुना वाटर एसपीवी का गठन किया जाएगा। राजस्थान सरकार डीपीआर केंद्रीय जल आयोग को भेज चुकी है, जबकि हरियाणा ने अलाइनमेंट को सैद्धांतिक मंजूरी दे दी है।

उत्तराखंड की एंट्री

उत्तर प्रदेश से अलग होकर उत्तराखंड राज्य बनने के बाद नवंबर 2000 में उसके मुख्यमंत्री को समीक्षा समिति में शामिल किया गया। वर्ष 2001 में अपर यमुना रिवर बोर्ड में भी उत्तराखंड के प्रतिनिधि को स्थान दिया गया। हालांकि उत्तर प्रदेश के हिस्से से उत्तराखंड को मिलने वाले जल हिस्से का अंतिम निर्धारण अब भी केंद्र सरकार के विचाराधीन है।

परियोजना की कुल लागत लगभग 34,102 करोड़ रुपये

295.5 किलोमीटर लंबी भूमिगत पाइपलाइन हथिनीकुंड बैराज से चूरू जिले के हंसियावास जलाशय तक बिछाई जाएगी। तीन भूमिगत पाइपलाइन, निरीक्षण सड़क, कृत्रिम जलाशय तथा आधुनिक जल प्रबंधन प्रणाली विकसित की जाएगी। इससे राजस्थान के चूरू, सीकर, झुंझुनूं और भरतपुर क्षेत्र को पेयजल और सिंचाई के लिए लाभ मिलेगा।

2012 : राजस्थान को मिला यमुना जल में हिस्सा

वर्ष 2012 में केंद्र सरकार ने राजस्थान को भी यमुना नदी के पानी में हिस्सा देने पर सहमति दी। हालांकि उस समय पानी को राजस्थान तक पहुंचाने के लिए आवश्यक पाइपलाइन और अन्य आधारभूत ढांचा तैयार नहीं होने के योजना धरातल पर नहीं उतर सकी।

34,10 2 करोड़ रुपये की महत्वाकांक्षी परियोजना

1994 में हिस्सेदारी मिलने के बावजूद राजस्थान अपने हिस्से का पानी नहीं ला पाया था। अब नए एमओओ के बाद इस दिशा में बड़ा रास्ता साफ हुआ है। फरवरी 2024 में राजस्थान और हरियाणा के मुख्यमंत्रियों के बीच प्रारंभिक समझौता हुआ। जून 2026 में परियोजना के क्रियान्वयन की रूपरेखा तैयार हुई और 29 जून 2026 को अंतिम एमओओ पर हस्ताक्षर किए गए।

आधुनिक जल प्रबंधन प्रणाली विकसित होगी : भजन लाल

समझौते के बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के जयपुर पहुंचने पर भाजपा ने भव्य स्वागत और रोड शो का आयोजन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्षों से लंबित यमुना जल परियोजना को उनकी सरकार ने आगे बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि अब शेखावाटी का किसान पानी मिलने के बाद अपनी मेहनत से सोना उगाएगा।

समझौते को सार्वजनिक किया जाए : गहलोत

पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने नए एमओए को सार्वजनिक करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि जनता को यह जानने का अधिकार है कि समझौते में किन शर्तों पर सहमति बनी है। गहलोत ने आरोप लगाया कि फरवरी 2024 के पहले हुए समझौते को भी लंबे समय तक सार्वजनिक नहीं किया गया था। उन्होंने कहा कि यदि नए समझौते में भी हरियाणा को प्राथमिकता देने जैसी कोई शर्त शामिल है, तो यह 1994 के मूल समझौते की भावना के विपरीत होगा, जिसमें सभी राज्यों को उपलब्ध जल के अनुपात पर पानी देने का प्रावधान है। उन्होंने मांग की कि लोकतांत्रिक पारदर्शिता बनाए रखने के लिए नए एमओए की प्रति तत्काल सार्वजनिक की जाए, ताकि राजस्थान के जल अधिकारों को लेकर किसी प्रकार की आशंका न रहे।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

चिकित्सकों व मरीजों के बीच भावनात्मक रिश्ता और अटूट करने की जरूरत

अभी हाल में डॉक्टर्स डे मनाया गया। ये दुनियाभर चिकित्सकों का उनके योगदान को सम्मान देने के लिए मनाया जाता है। वैश्विक सर्वेक्षणों में भी चिकित्सक सबसे भरोसेमंद पेशेवरों में शीर्ष पर हैं। परंतु कड़वा सच यह है कि समय के साथ यह पवित्र भरोसा कमजोर हो रहा है। दुर्घटना, गंभीर रोग में जान न बच पाने, शत-प्रतिशत परिणाम न आने या संवाद की कमी के कारण मरीजों और चिकित्सकों के बीच गहरी खाई पैदा हो रही है। इसी अविश्वास ने अस्पतालों में हिंसक घटनाओं को बढ़ाया है। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अनुसार लगभग 75 प्रतिशत चिकित्सक कार्यस्थल पर हिंसा या दुर्व्यवहार का सामना कर चुके हैं। चिकित्सा पेशे के अन्य आंकड़े और भी हृदय विदारक हैं। भारत में चिकित्सकों की औसत आयु सामान्य जनसंख्या की तुलना में लगभग दस वर्ष कम है। अध्ययन बताते हैं कि देश के 82.7 प्रतिशत चिकित्सक निरंतर भयंकर तनाव में जीते हैं। आज हमारा देश मेडिकल टूरिज्म के दुनिया गंतव्यों में थाईलैंड के साथ शीर्ष पर है।

उन्नत तकनीकों ने चिकित्सा को नई ऊंचाइयां दी हैं लेकिन इस चमकती तस्वीर के पीछे हमारे चिकित्सकों का अथक त्याग है। सबसे बड़ी आवश्यकता है कि देश अपनी जीडीपी का जो 3.8 प्रतिशत स्वास्थ्य पर खर्च करता है, उसे बढ़ाकर 8 से 10 प्रतिशत किया जाए। स्थायी समाधान तभी निकलेगा जब समाज स्वीकार करेगा कि चिकित्सक कोई चमत्कारी भगवान नहीं, बल्कि हाड़ मांस का मनुष्य है। उसे भी पर्याप्त विश्राम और उपचार का पूर्ण अधिकार है। सुरक्षित कार्यस्थल, पारदर्शी व्यवस्था और मानसिक स्वास्थ्य सुविधाएं अनिवार्य हैं। इस राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस पर आइए, उस सफेद मुखौटे के पीछे छिपे इंसान के दर्द को समझें। भारत के मशहूर चिकित्सक डॉ. बिधान चंद्र रॉय को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम अविश्वास की दीवारों को गिराकर विश्वास, करुणा और सम्मान का रिश्ता गढ़ें। स्वस्थ समाज का निर्माण तभी संभव है, जब हम अपने देखभाल करने वालों की देखभाल करेंगे। सरकारी अस्पतालों के आपातकालीन वार्डों में रेजिडेंट चिकित्सक बिना पर्याप्त नींद लिए, महज चाय-बिस्किट के सहारे 24 से 48 घंटे की निर्बाध ड्यूटी करते हैं। इतने कम समय में किसी अनजान की जटिल पीड़ा समझना चमत्कार है। इस अमानवीय कार्यभार का परिणाम है, बढ़ता बर्नआउट, अवसाद और चिकित्सकों में आत्महत्या की बढ़ती दर। महिला चिकित्सकों की स्थिति और असुरक्षित है। 9 अगस्त 24 को कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में युवा महिला रेजिडेंट डॉक्टर के साथ हुई वीभत्स घटना ने देश को झकझोर दिया।

“ दुर्घटना, गंभीर रोग में जान न बच पाने, शत-प्रतिशत परिणाम न आने या संवाद की कमी के कारण मरीजों और चिकित्सकों के बीच गहरी खाई पैदा हो रही है। इसी अविश्वास ने अस्पतालों में हिंसक घटनाओं को बढ़ाया है। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अनुसार लगभग 75 प्रतिशत चिकित्सक कार्यस्थल पर हिंसा या दुर्व्यवहार का सामना कर चुके हैं।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

अलनीनो से निपटने को बने दीर्घकालीन रणनीति

ज्ञानेंद्र रावत

अलनीनो के शुरुआती संकेत मानसून पर दिखाई देने लगे हैं। देखा जाये तो मानसून की रफ्तार धीमी होने की वजह से देश में कुछ समय पहले तक सूखे जैसे हालात का अंदेशा बढ़ने लगा था। अक्सर जून के तीसरे हफ्ते तक देश के बड़े हिस्से को मानसून सामान्यत: कवर कर लेता है। लेकिन पिछले पखवाड़े से इसकी गति ठहरी होने का सीधा-सीधा असर बारिश पर पड़ा है जिसका नतीजा देश के आधे से ज्यादा हिस्से पर सूखे जैसे हालात दिखाई दिए थे। संयुक्त राष्ट्र की संस्था खाद्य एवं कृषि संगठन यानी एएफओ ने पहले ही चेतावनी दे दी है कि अलनीनो का भारत सहित एशिया के कई देशों की कृषि और खाद्य सुरक्षा पर व्यापक असर पड़ सकता है। खासकर भारत में धान और मक्का जैसी वर्षा आधारित फसलों के उत्पादन पर खासा असर पड़ सकता है।

आशंका है कि अलनीनो के प्रभाव के चलते भारत के ज्यादातर हिस्सों में सामान्य से कम बारिश हो सकती है। ऐसे हालात में खेती के लिए जरूरी नमी में कमी आयेगी। यही नहीं इसका असर वैश्विक खाद्य बाजारों और कीमतों पर पड़ेगा। एएफओ की रिपोर्ट के अनुसार भारत, पाकिस्तान, म्यांमार, थाईलैंड, कंबोडिया, वियतनाम, फिलीपींस, इंडोनेशिया और तिमोर-लेस्ते जैसे देशों पर इसकी अत्यधिक मार पड़ेगी। इन देशों पर सूखे की मार का खतरा बढ़ सकता है। इससे इन देशों की कृषि पर आधारित लाखों लोगों की आजीविका और खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ जायेगी। स्काईमेट की मानें तो फिलहाल देश के लगभग आधे हिस्से में बारिश की भारी कमी है। दरअसल, अलनीनो प्रभाव से प्रशांत महासागर का पानी गर्म होने लगता है। भारत में इसका असर कमजोर मानसून और कम बारिश से जोड़ा जाता है। इतिहास इस बात का सबूत है कि ऐसी स्थिति में भारत में मौसमी बारिश न केवल कम हुई है बल्कि उसकी असमानता भी खतरनाक स्थिति तक बढ़ी है। आमतौर पर मानसून में ब्रेक की यह स्थिति अक्सर जुलाई या अगस्त में दिखाई देती है लेकिन इस बार मानसून की यह सुस्त रफ्तार चिंता का विषय है।

इसकी अहम वजह बंगाल की खाड़ी और अरब सागर में किसी मजबूत मौसम प्रणाली का विकसित न हो पाना है। दरअसल, बंगाल की खाड़ी में बनने वाले निम्न दबाव वाले क्षेत्र और चक्रवात मानसून को मजबूती देते हैं और उसे दूसरे हिस्सों में आगे बढ़ने में मदद करते हैं। फिर अरब सागर में लो लेवल जेट भी पर्याप्त रूप से विकसित न हो पाना

भी इसकी अहम वजह है। चिंताजनक है कि अलनीनो का सबसे बड़ा असर बारिश की वितरण व्यवस्था पर पड़ता है। असलियत यह है कि कई बार कुल बारिश बहुत कम नहीं होती लेकिन उसका समय और क्षेत्रीय वितरण असंतुलित हो जाने से विभिन्न राज्यों में बुआई, अंकुरण और फसल की शुरुआती बढ़ोतरी पर काफी असर पड़ता है। ऐसे में सबसे बड़ी चिंता उन इलाकों को लेकर है कि जहां अब भी खेती बारिश पर ही निर्भर है। फिर देश के लगभग आधे से अधिक कृषि क्षेत्र में सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था ही नहीं है। वहां किसानों की सारी उम्मीद बारिश पर ही टिकी होती है। सच्चाई यह है कि तेलंगाना, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में सामान्य से काफी कम बारिश हुई है। इतना ही नहीं, जल भंडारण पर भी असर साफ दिखाई दे रहा है। केंद्रीय जल आयोग के मुताबिक देश के कुल 166 प्रमुख जलाशयों में कुल क्षमता का केवल 27.5 फीसदी पानी ही उपलब्ध है। यदि मानसून की सुस्ती लम्बे समय तक बनी रहती है तो पेयजल और सिंचाई दोनों मोर्चों पर दबाव काफी बढ़ जायेगा। निस्संदेह, मानसून की सुस्त चाल से कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और जल उपलब्धता पर व्यापक असर पड़ सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक का भी मानना है कि दक्षिण-पश्चिम मानसून के कमजोर पड़ने से घरेलू आर्थिकी और मुद्रास्फीति के परिदृश्य पर दबाव पड़ेगा। यही नहीं अलनीनो का खतरा छोटी राशि का कर्ज देने वाले संस्थानों के लिए ऋण वसूली को भी प्रभावित कर सकता है। क्रिसिल की रिपोर्ट का कहना है कि परिवारों के खर्च करने योग्य नगदी में कमी बड़ा जोखिम पैदा कर सकता है। मौसम विज्ञानी अलनीनो की स्थिति हाल-फिलहाल भले ज्यादा गंभीर न मानें लेकिन आसन्न खतरे को नजरअंदाज तो नहीं कर सकते।

अलनीनो के संभावित खतरे को देखते हुए सरकार अलर्ट मोड पर है। दरअसल अलनीनो का खतरा केवल मौसम का मुद्दा नहीं है, बल्कि कृषि, उत्पादन, खाद्य कीमतों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से भी जुड़ा है। यही वजह है सरकार हर तरह की तैयारी रखने पर जोर दे रही है। सरकार की रणनीति कम बारिश होने की स्थिति से मुकाबला हेतु वैकल्पिक व्यवस्था तैयार रखने की है। यही कारण है कि सरकार ने राज्यों से स्थानीय परिस्थितियों के मद्देनजर फसल योजना बनाने, कम पानी में बेहतर उपज देने वाली फसलों को बढ़ावा देने और किसानों तक समय पर वैज्ञानिक सलाह पहुंचाने के लिए कहा गया है।

समुद्र से हो सकता है पेयजल मंथन

दीपक कुमार शर्मा

देश के अनेक शहरों और गांवों में भूजल स्तर लगातार नीचे जा रहा है। नदियां प्रदूषित हो रही हैं, वर्षा का स्वरूप अनिश्चित होता जा रहा है और जलवायु परिवर्तन ने स्थिति को और गंभीर बना दिया है। बढ़ती आबादी, तेजी से हो रहे शहरीकरण और औद्योगिक विकास के कारण पानी की मांग लगातार बढ़ रही है। तीन ओर से समुद्र से घिरे भारत के सामने जल का असीमित भंडार मौजूद है। पृथ्वी पर उपलब्ध कुल जल का लगभग 97 प्रतिशत भाग समुद्रों में खारे पानी के रूप में है, जबकि केवल लगभग 2.5 प्रतिशत जल मीठा है। इसमें भी अधिकांश जल हिमनदों और बर्फ की चादरों में बंद है तथा मानव उपयोग के लिए सीधे उपलब्ध मीठा जल एक प्रतिशत से भी कम है। ऐसे में समुद्री जल को शुद्ध कर उपयोग योग्य बनाना भविष्य की आवश्यकता बनता जा रहा है।

आज आधुनिक विज्ञान की सहायता से समुद्री जल से नमक और अन्य अशुद्धियां हटाकर उसे पेयजल में परिवर्तित किया जा सकता है। इसे समुद्री जल शोधन कहा जाता है। विश्व के अनेक देशों ने इसे अपनी जल सुरक्षा की आधारशिला बना लिया है। भारत के लिए भी अब इस दिशा में गंभीरता से आगे बढ़ने का समय आ गया है। सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, कुवैत, बहरीन और ओमान जैसे देशों में प्राकृतिक मीठे जल के स्रोत अत्यंत सीमित हैं। वहां वर्षा नगण्य होती है और अधिकांश भूभाग रेगिस्तान है। इसके बावजूद वहां नागरिकों को चौबीसों घंटे सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराया जाता है। इसका मुख्य कारण समुद्री जल शोधन संयंत्र हैं। भारत की स्थिति खाड़ी देशों से अलग अवश्य है, लेकिन चुनौतियां कम नहीं हैं। विश्व की लगभग 18 प्रतिशत आबादी भारत में रहती है, जबकि मीठे जल संसाधनों में उसकी हिस्सेदारी केवल लगभग 4 प्रतिशत है। देश में उपलब्ध मीठे जल का लगभग 80 प्रतिशत उपयोग कृषि क्षेत्र करता है। दूसरी ओर, उद्योगों और शहरों की बढ़ती आवश्यकताओं ने जल संकट को और गहरा कर दिया है। सबसे बड़ी चिंता भूजल का लगातार दोहन है।

हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, गुजरात और तमिलनाडु सहित अनेक राज्यों में भूजल स्तर तेजी से नीचे जा रहा है। कई क्षेत्रों में हर वर्ष लगभग एक मीटर तक जल स्तर गिरने की रिपोर्ट सामने आती रही है। ऐसे समय में समुद्री जल शोधन भारत के लिए एक रणनीतिक विकल्प बन सकता है। देश के पास लगभग 7,516 किलोमीटर लंबी समुद्री तटरेखा है। गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में बड़े पैमाने पर समुद्री जल शोधन परियोजनाएं विकसित की जा सकती हैं। इससे तटीय शहरों की पेयजल आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा पूरा किया जा सकता है और भूजल पर निर्भरता कम होगी। चेन्नई इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। आज यह अपने पेयजल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा समुद्री जल शोधन संयंत्रों से प्राप्त करता है।

गुजरात के दहेज, जामनगर और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में भी इस तकनीक का उपयोग लगातार बढ़ रहा है। हालांकि, यह भी सत्य है कि समुद्री जल शोधन कोई जादुई समाधान नहीं है। इसकी सबसे बड़ी चुनौती लागत है। संयंत्रों की स्थापना, संचालन और रखरखाव पर भारी निवेश की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, बड़ी मात्रा में ऊर्जा की भी जरूरत पड़ती है। यदि ऊर्जा का स्रोत जीवाश्म ईंधन हो, तो लागत बढ़ने के साथ-साथ कार्बन उत्सर्जन भी बढ़ता है। आज भारत विश्व के अग्रणी सौर ऊर्जा उत्पादक देशों में शामिल है। राजस्थान, गुजरात, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में विशाल सौर एवं पवन ऊर्जा क्षमता उपलब्ध है। यदि समुद्री जल शोधन संयंत्रों को नवीकरणीय ऊर्जा से जोड़ा जाए, तो उनकी परिचालन लागत और कार्बन उत्सर्जन दोनों में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है। एक अन्य चुनौती पर्यावरण संरक्षण की है। समुद्री जल से नमक अलग करने के बाद अत्यधिक खारा अवशेष बचता है। यदि इसे वैज्ञानिक उपचार के बिना समुद्र में छोड़ दिया जाए, तो समुद्री जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए प्रत्येक नई परियोजना के साथ कठोर पर्यावरणीय मानकों का पालन और आधुनिक अपशिष्ट प्रबंधन व्यवस्था अनिवार्य होनी चाहिए। भारत को इस क्षेत्र में चरणबद्ध रणनीति अपनानी चाहिए।

पहले चरण में प्रमुख तटीय शहरों में बड़े समुद्री जल शोधन संयंत्र स्थापित किए जाएं। दूसरे चरण में तटीय औद्योगिक क्षेत्रों को समुद्री जल आधारित जलापूर्ति से जोड़ा जाए, ताकि उद्योगों द्वारा मीठे जल का उपयोग कम हो। तीसरे चरण में पाइपलाइन नेटवर्क विकसित कर निकटवर्ती आंतरिक क्षेत्रों तक भी शुद्ध जल पहुंचाने की व्यवस्था बनाई जा सकती है। लेकिन केवल समुद्री जल शोधन से भारत की सभी जल समस्याओं का समाधान संभव नहीं होगा। वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण, तालाबों और झीलों का संरक्षण, नदियों की स्वच्छता तथा उपचारित अपशिष्ट जल के पुन: उपयोग को समान प्राथमिकता देनी होगी। दरअसल, भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती पानी की कमी नहीं, बल्कि जल प्रबंधन की है। हर वर्ष अरबों घन मीटर वर्षा जल बिना उपयोग के समुद्र में चला जाता है। अनेक शहरों में उपचारित जल का पुन: उपयोग नगण्य है। यदि भारत में उपलब्ध जल का वैज्ञानिक प्रबंधन किया जाए और समुद्री जल शोधन जैसी आधुनिक तकनीकों को साथ जोड़ा जाए, तो आने वाले दशकों में जल संकट की गंभीरता को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

बालासन

बालासन एक रिलैक्सिंग योगासन है, जो दिमाग को गहरी शांति देता है। इसे करने से शरीर का तनाव कम होता है और मन स्थिर होता है। गर्मी में जब बेचैनी बढ़े, तब 5-7 मिनट बालासन करना बेहद फायदेमंद होता है। इसके अलावा बालासन आपके जांघों, कमर और हिप्स में खींचव उत्पन्न करते हैं, जिससे इन क्षेत्रों में तनाव दूर करने और लचीलेपन को बढ़ाने में मदद मिलती है। इस मुद्रा को करने से पीठ के निचले हिस्से में दर्द से राहत मिलती है। यह मुद्रा पैरों में तंग मांसपेशियों को धीरे से खींचकर और पीठ के निचले हिस्से के दर्द को कम करने में मदद कर सकती है।

गुस्सा कंट्रोल करने के लिए गर्मी में करें ये आसान

गर्मी के मौसम में शरीर के साथ-साथ मन भी गर्मी से परेशान हो जाता है। तेज धूप, पसीना, बेचैनी और नींद की कमी मिलकर मानसिक संतुलन को बिगाड़ देते हैं। यही कारण है कि गर्मियों में चिड़चिड़ापन, तनाव और गुस्सा तेजी से बढ़ता है। छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा आना, ध्यान न लगना और मन का अशांत रहना आम समस्या बन जाती है। ऐसे में अगर समय रहते इसे रोका न जाए, तो यह रिश्तों, काम और स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर डाल सकता है। योग के जरिए इस समस्या को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। योग सिर्फ शरीर को ही नहीं, बल्कि मन को भी शांत और स्थिर बनाता है। नियमित योग अभ्यास से शरीर का तापमान संतुलित रहता है, दिमाग ठंडा रहता है और भावनाओं पर नियंत्रण रखा जा सकता है। गर्मियों में कुछ विशेष योगासन और प्राणायाम आपके गुस्से को शांत करने में बेहद प्रभावी साबित हो सकते हैं।

शीतली प्राणायाम

गर्मियों के मौसम में शरीर का तापमान बढ़ जाता है, जिससे बेचैनी और चिड़चिड़ेपन की समस्या हो सकती है। शीतली प्राणायम करने से शरीर के तामपमान को कम करने और मानसिक तनाव से राहत पाने में मदद मिलती है। इसमें मुंह से ठंडी हवा अंदर लेकर नाक से बाहर छोड़ी जाती है। यह शरीर के तापमान को कम करता है और दिमाग को तुरंत शांत करता है। रोज़ाना 5-10 मिनट इसका अभ्यास करने से गुस्सा और चिड़चिड़ापन तेजी से कम होता है।

शवासन

शवासन योग का सबसे सरल लेकिन असरदार आसन है। इसमें शरीर को पूरी तरह ढीला छोड़ दिया जाता है, जिससे मानसिक और शारीरिक तनाव खत्म होता है। गर्मी में यह दिमाग को ठंडा रखने में बेहद मदद करता है।

अनुलोम-विलोम

अनुलोम-विलोम प्राणायाम मानसिक संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। यह दिमाग के दोनों हिस्सों को संतुलित करता है और तनाव को कम करता है। सुबह या शाम 10 मिनट इसका अभ्यास करने से मन शांत और फोकस्ड रहता है, जिससे गुस्सा कंट्रोल में रहता है। यह प्राणायाम आपके ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने में मदद करती है। गर्मी के कारण गुस्से या तनाव की स्थिति में शरीर का तापमान और तनाव दोनों बहुत ज्यादा बढ़ सकता है, जिसे कंट्रोल करने में यह फायदेमंद है, क्योंकि इससे आपका हार्ट हेल्थ भी बेहतर रहती है।

ध्यान से पाएं भावनाओं पर नियंत्रण

ध्यान यानी मेडिटेशन आपके मन को स्थिर और शांत बनाता है। रोज़ाना 10-15 मिनट ध्यान करने से आप अपनी भावनाओं को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं और गुस्से पर नियंत्रण पा सकते हैं। यह मानसिक गर्मी को कम करने का सबसे प्रभावी तरीका है।

हंसना मना है

सोनू अपने दोस्त मिंटू को ज्ञान बांट रहा था अगर परीक्षा में पेपर बहुत कठिन हो तो आंखें बंद करो, गहरी सांस लो और जोर से कहो- ये सब्जेक्ट बहुत मजेदार है इसलिए अगले साल फिर पढ़ेंगे।

एक बुढ़िया को एक भिखारी मंदिर के बाहर मिला... भिखारी - भगवान के नाम पर कुछ दे दो मां जी, चार दिन से कुछ नहीं खाया। बुढ़िया 500 का नोट निकालते हुए बोली - 400 खुले हैं? भिखारी - हां हैं मां जी, बुढ़िया - तो उससे कुछ लेकर खा लेना...

पति बोला- अभी सुबह न जाने किसका मुंह देखकर उठा था कि दिन का भोजन नसीब नहीं हुआ? पति ने शिकायत की। पत्नी बोली-मेरी मानो, बेडरूम में लगे आइने को हटा दो, वरना रोजाना यही शिकायत रहेगी।

एक बुढा बस में सीट पर अकेला बैठा था। तभी एक बुढ़िया आई और उसके बगल में बैठ गयी! कुछ देर बाद बुढ़िया बूढ़े से बोली- अरे अंकल जी कहां जा रहे हो। लेकिन जवाब न देकर बुढा चुप बैठा रहा। बुढ़िया फिर बोली- अंकल जी कहा जा रहे हो? अब बुढ़े से चुप नहीं रहा गया और बोला- बेटी तू बहुत सुन्दर है, जवान है, तेरे खातिर लड़का देखने जा रहा हूं।

कहानी | यज्ञ की सच्ची पूर्ण आहुति

एक बार युधिष्ठिर ने विधि-विधान से महायज्ञ का आयोजन किया। उसमें दूर-दूर से राजा-महाराजा और विद्वान आए। यज्ञ पूरा होने के बाद दूध और घी से आहुति दी गई, लेकिन फिर भी आकाश घंटियों की ध्वनि सुनाई नहीं पड़ी। क्योंकि जब तक घंटियां नहीं बजतीं, यज्ञ अपूर्ण माना जाता है। युधिष्ठिर को चिंता हुई। वह सोचने लगे कि आखिर यज्ञ में कौन सी कमी रह गई। उन्होंने भगवान कृष्ण से अपनी समस्या के बारे में बताया। श्री कृष्ण ने कहा, किसी गरीब, सच्चे और निश्छल हृदय वाले व्यक्ति को बुलाकर भोजन कराएं। जब उनकी आत्मा तृप्त होगी तब आकाश घंटियां अपने आप बज उठेंगी। श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर को ऐसे एक व्यक्ति के बारे में बताया। तब धर्मराज स्वयं उसकी खोज में निकल पड़े। आखिरकार उन्हें उस निर्धन की कुटिया मिल गई। युधिष्ठिर ने अपना परिचय देते हुए उससे प्रार्थना की - बाबा, आप हमारे यहां भोजन करने की कृपा करें। पहले तो बाबा ने मना कर दिया लेकिन काफी प्रार्थना करने पर वह तैयार हो गये। युधिष्ठिर उन्हें लेकर यज्ञ स्थल पर आए। द्रौपदी ने अपने हाथ से स्वादिष्ट खाना बनाकर उन्हें खिलाया। भोजन करने के बाद उस व्यक्ति ने ज्यों ही संतुष्ट होकर डकार ली, आकाश की घंटियां गूंज उठीं। यज्ञ की सफलता से सब प्रसन्न हुए। युधिष्ठिर ने कृष्ण से पूछा- भगवन, इस निर्धन व्यक्ति में ऐसी कौन सी विशेषता है कि उनके खाने के बाद ही यज्ञ सफल हो सका। श्री कृष्ण ने कहा - धर्मराज, इस व्यक्ति में कोई विशेषता नहीं है, यह गरीब है। दरअसल आपने पहले जिन्हें भोजन कराया वे सब तृप्त थे। जो व्यक्ति पहले से तृप्त हैं, उन्हें भोजन कराना कोई विशेष उपलब्धि नहीं है। जो लोग अतृप्त हैं, जिन्हें सचमुच भोजन की जरूरत है, उन्हें खिलाने से उनकी आत्मा को जो संतोष मिलता है, वही सबसे बड़ा यज्ञ है। वही सच्ची आहुति है। आप ने जब एक अतृप्त व्यक्ति को भोजन कराया तभी देवता प्रसन्न हुए और सफलता की सूचक घंटियां बज गईं।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

यात्रा लाभदायक रहेगी। भेंट व उपहार की प्राप्ति होगी। कोई बड़ी समस्या का हल सहज ही होगा। समय अनुकूल है। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा।

वृषभ

परिवार के किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य पर खर्च होगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय में निश्चितता रहेगी। चिंता तथा तनाव रहेंगे। जल्दबाजी न करें। विवाद को बढ़ावा न दें।

मिथुन

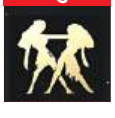

आय में वृद्धि होगी। लाभ में वृद्धि होगी। कारोबार में वृद्धि होगी। शेयर मार्केट से लाभ होगा। व्यापार ठीक चलेगा। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। समय की अनुकूलता का लाभ लें।

कर्क

आर्थिक उन्नति की योजना बनेगी। व्यापार लाभदायक रहेगा। कार्यस्थल पर परिवर्तन हो सकता है। नए उपक्रम प्रारंभ हो सकते हैं। कार्यसिद्धि होगी। प्रसन्नता में वृद्धि होगी।

सिंह

नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। पार्टनरों का सहयोग मिलेगा। दुष्टजनों से सावधान रहें। प्रमाद न करें। धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा।

कन्या

बनते कामों में विघ्न आ सकते हैं। चिंता तथा तनाव रहेंगे। बेकार बातों की तरफ ध्यान न दें। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय होगी। फालतू खर्च होगा। विवाद को बढ़ावा न दें।

तुला

प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। व्यापार लाभदायक रहेगा। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा। मानसिक बेचैनी रहेगी।

वृश्चिक

स्थायी संपत्ति के कार्य बड़ा लाभ दे सकते हैं। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। बेरोजगारी दूर करने के प्रयास सफल रहेंगे। समय की अनुकूलता का लाभ लें।

धनु

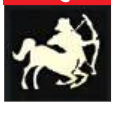

रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। पार्टी व पिकनिक का आनंद प्राप्त होगा। मित्रों के साथ समय मनोरंजक व्यतीत होगा। प्रसन्नता में वृद्धि होगी। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा।

मकर

मेहनत अधिक होगी। लाभ के अवसर टलेंगे। मानसिक बेचैनी रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। लाभ होगा। कोई बड़ी बाधा उठ खड़ी हो सकती है। विवाद के बढ़ावा न दें।

कुम्भ

व्यापार लाभदायक रहेगा। निवेश शुभ रहेगा। ऐश्वर्य के साधनों पर खर्च होगा। घर-बाहर सुख-शांति रहेगी। भाग्य का साथ रहेगा। प्रमाद न करें। मान-सम्मान मिलेगा।

मीन

उत्साहवर्धक सूचना मिलेगी। आत्मसम्मान बना रहेगा। बुद्धि का प्रयोग करेंग। कार्य में सफलता मिलेगी। पार्टनरों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा।

बॉलीवुड | मन की बात

महिलाओं की उम्र को नहीं उनके सफर को देखें : ईशा

कई सितारों ने ज्यादा उम्र के पुरुष कलाकारों के छोटी उम्र की अभिनेत्रियों के साथ रोमांस करने के खिलाफ आवाज उठाई है। अब इसमें नया नाम एक्ट्रेस ईशा कोप्पिकर का जुड़ गया है। उन्होंने इंडस्ट्री में उम्र संबंधी भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई है। ईशा कोप्पिकर ने हाल ही में इंस्टाग्राम पर अपना एक वीडियो शेयर किया है। इसमें उन्होंने कहा यह बहुत अजीब है, है ना? एक आदमी की उम्र बढ़ने को अनुभव कहा जाता है, जबकि एक महिला की उम्र बढ़ने को समस्या। फिल्मों में हम हीरो को अपनी आधी उम्र की लड़कियों के साथ रोमांस करते देखते हैं। वे उनके हीरो बन जाते हैं। यह बहुत नॉर्मल है। उन्होंने आगे कहा अगर कोई महिला स्टाइलिश है, अपनी बात खुलकर रखती है और अपनी अलग पहचान को सेलिब्रेट करती है, तो उससे कहा जाता है कि इस उम्र में अपनी उम्र के हिसाब से व्यवहार करो। सच तो यह है कि समय के साथ, एक महिला कम नहीं होती, वह और गहरी होती जाती है। उसका कॉन्फिडेंस शोर नहीं मचाता। वह और मजबूत होता है। उसकी खूबसूरती सिर्फ उसके चेहरे में नहीं होती। यह उसके सफर में दिखती है। झुर्रियां सिर्फ उसकी उम्र नहीं दिखातीं, वे उसके संघर्षों को दिखाती हैं। कांटे फिल्म की एक्ट्रेस ने आगे कहा, आप उसमें उसकी हीलिंग और उसके जीवन के अनुभव को देख सकते हैं। अगर हर महिला को जीवन मिला है, तो उसकी उम्र बढ़ेगी ही। आपकी मां, आपकी पत्नी, आपकी बहन, आपकी बेटी और एक दिन आप खुद। हर किसी की उम्र बढ़ती है। इसलिए, उम्र बढ़ने को अपमान न बनाएं। हर उम्र में महिलाओं का सम्मान करें। उनकी उम्र न देखें, बल्कि उनके सफर को देखें। उनकी त्वचा न देखें, बल्कि उनकी ताकत को देखें। इसे समझें। क्योंकि गरिमा की कोई एक्सपायरी डेट नहीं होती। कॉन्फिडेंस की कोई उम्र नहीं होती।

अन्नू कपूर ने की बिग बी की तारीफ

उत्तर दा पुत्तर में नजर आएंगे अन्नू कपूर

अन्नू कपूर को हिंदी सिनेमा में 44 साल पूरे हो चुके हैं। वे जल्द ही एक कॉमेडी फिल्म उत्तर दा पुत्तर में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म की कहानी वास्तु शास्त्र और इस सोच पर बनी है कि सही दिशा चुनने से इंसान की किस्मत बदल सकती है। इस फिल्म का निर्देशन रविंदर सिवाच ने किया है। यह फिल्म 24 जुलाई, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

अन्नू कपूर ने महानायक अमिताभ बच्चन की जमकर तारीफ की है। उन्होंने कहा कि सिनेमा जगत में अमिताभ बच्चन का पिछले लगभग 57 साल का करियर एक ऐसा बेमिसाल रिकॉर्ड है, जिसे भविष्य में कोई भी नहीं तोड़ पाएगा। एएनआई की एक खबर के अनुसार, अन्नू कपूर ने कहा कि अमिताभ बच्चन साल 1969 में मुंबई आए थे। बचपन में उनके माता-पिता ने उनका नाम इंकलाब रखा था। आज साल 2026 में उन्हें फिल्म इंडस्ट्री में लगातार काम करते हुए 57 साल हो चुके हैं। अन्नू कपूर ने कहा कि अमिताभ बच्चन से पहले इतने लंबे समय तक मनोरंजन की दुनिया में एक्टिव रहने का रिकॉर्ड सिर्फ महान गायिका लता मंगेशकर और आशा भोसले के नाम था। अब उनके बाद अमिताभ बच्चन ने यह मुकाम हासिल किया है। अमिताभ बच्चन ने शोले, दीवार और डॉन जैसी ढेरों सुपरहिट हिंदी फिल्मों के साथ-साथ गुजराती, तेलुगु और तमिल फिल्मों में भी काम किया है। आज 83 साल की उम्र में भी वह फिल्मों और टीवी पर लगातार काम कर रहे हैं।

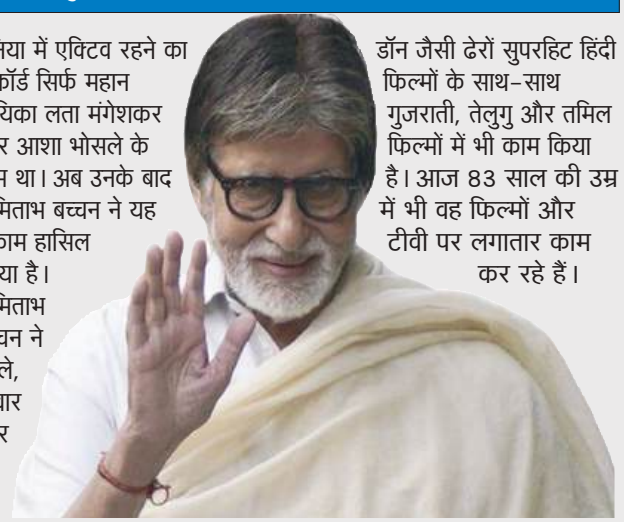

15 अक्टूबर को सिनेमाघरों में धमाका करेगी रजनीकांत की फिल्म 'जेलर'

फिल्म 'जेलर 2' को बनाने वाली कंपनी सन पिक्चर्स ने सोशल मीडिया पर एक टीजर शेयर करते हुए इसकी रिलीज डेट का खुलासा किया है। रिलीज डेट सामने आने के बाद फैंस की एक्साइटमेंट और बढ़ गई है। रजनीकांत की फिल्म 'जेलर 2' 15 अक्टूबर को रिलीज की जाएगी, जो फेस्टिव सीजन के दौरान है। ऐसे में मेकर्स को उम्मीद है कि लंबा वीकेंड मिलने की वजह से फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर अच्छा फायदा मिलेगा। भारत के साथ-साथ फिल्म को इंटरनेशनल लेवल पर भी बड़े स्तर पर रिलीज किया जाएगा, जहां रजनीकांत की जबरदस्त फैन फॉलोइंग है।

कंपनी सन पिक्चर्स ने सोशल मीडिया पर एक टीजर शेयर करते हुए इसकी रिलीज डेट का खुलासा किया है। रिलीज डेट सामने आने के बाद फैंस की एक्साइटमेंट और बढ़ गई है। इस फिल्म का निर्देशन नेल्सन दिलीप कुमार कर रहे हैं, जिन्होंने पहली 'जेलर' भी बनाई थी। वहीं, म्यूजिक एक बार फिर अनिरुद्ध रविचंदर दे रहे हैं। फिल्म की शूटिंग इस साल की शुरुआत में ही पूरी हो चुकी है। पहली 'जेलर' की कहानी एक रिटायर्ड जेलर मुथुवेल पांडियन की थी, जो अपने बेटे पर खतरा आने के बाद पुराने अंडरवर्ल्ड कनेक्शन का सहारा लेता है। एक्शन, डार्क कॉमेडी और स्टाइलिश कहानी के साथ यह फिल्म 2023 की सबसे बड़ी हिट फिल्मों में शामिल रही थी। 'जेलर 2' में इस बार स्टारकास्ट और भी बड़ी होने वाली है। खबर है कि मोहनलाल और शिवा राजकुमार फिर से अपने कैमियो रोल में नजर आएंगे। इसके अलावा हिंदी सिनेमा के कई बड़े सितारों को भी फिल्म में शामिल किया गया है, ताकि इसे पूरे भारत में और ज्यादा पसंद किया जा सके। फिल्म में मिथुन चक्रवर्ती, विद्या बालन और ऋतिक रोशन अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे, हालांकि उनके किरदारों के बारे में अभी ज्यादा जानकारी सामने नहीं आई है।

अजब-गजब | कभी थी इस गांव में एंट्री पर रोक, आज खुलकर घूमते हैं लोग

भारत का वो खूबसूरत गांव, जो 1971 से पहले पाकिस्तान में था

सरहदें सिर्फ जमीन को नहीं बांटतीं, कई बार लोगों के रिश्ते, यादें और पूरी जिंदगी भी दो हिस्सों में बंट जाती है। भारत-पाकिस्तान बंटवारे का दर्द आज भी लाखों परिवारों की कहानियों में जिंदा है। कुछ लोग रातों-रात हिंदुस्तानी से भारतीय और पाकिस्तानी बन गए। कई गांव ऐसे थे, जहां एक ही परिवार के लोग दो अलग देशों में बंट गए। ऐसी ही एक कहानी है लद्दाख के बेहद खूबसूरत गांव तुरतुक की, जो कभी पाकिस्तान का हिस्सा हुआ करता था, लेकिन 1971 की जंग के बाद भारत में शामिल हो गया। आज यह गांव अपनी खूबसूरती, संस्कृति और अनोखे इतिहास की वजह से दुनिया भर के लोगों को अपनी ओर खींचता है। लेकिन इस गांव की कहानी सिर्फ पहाड़ों और नजारों की नहीं, बल्कि बिछड़ते रिश्तों और बदलती सरहदों की भी है।

तुरतुक गांव जम्मू-कश्मीर के बाल्टिस्तान इलाके में पड़ता था। जम्मू-कश्मीर की सीमाएं तय होने से पहले बाल्टिस्तान एक अलग राज्य हुआ करता था। यहां 800 ईस्वी से लेकर 16वीं सदी तक तुर्किस्तान से आए यागबू वंश के शासकों का राज रहा। माना जाता है कि इन शासकों ने मध्य एशिया से आकर इस इलाके में अपनी सत्ता स्थापित की थी। उनके शासनकाल में बाल्टिस्तान में कला, संस्कृति और साहित्य को खूब बढ़ावा मिला। तुरतुक गांव में आज भी उस दौर की कई ऐतिहासिक इमारतें मौजूद हैं। इन पुरानी इमारतों को अब म्यूजियम का बना दिया गया है। जिसमें उस समय की विरासत और इतिहास की झलक देखने को मिलती है। तुरतुक के पुराने राजघराने के वंशज आज भी इस गांव को अपनी पुश्तैनी धरती मानते हैं। कराकोरम की ऊंची पहाड़ियों से घिरा यह इलाका प्राकृतिक खूबसूरती से भरपूर है। हालांकि भारत और पाकिस्तान के बीच लंबे समय तक चले सीमा विवाद और तनाव की वजह से यहां की सांस्कृतिक धरोहर और खूबसूरती पर कभी ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया। यहां जहां तक नजर जाती है, सिर्फ पहाड़, नदी और हरियाली दिखाई देती है। गांव की खूबसूरती इतनी खास है कि यहां पहुंचने वाला हर इंसान इसकी तारीफ किए बिना नहीं रह पाता। इस खूबसूरत से गांव के पास से श्योक नदी बहती है, जिसे पुराने समय में डेथ रिवर भी कहा जाता था। गांव में छोटे-छोटे घर, जौ के खेत और खुबानी के पेड़ इस जगह को और भी खूबसूरत बना देते हैं।

बहुत कम लोग जानते हैं कि एक समय में तुरतुक मशहूर सिल्क रोड से जुड़ा हुआ था। यहां से भारत, चीन, रोम और फारस तक व्यापार होता था। इस वजह से यहां की संस्कृति पर कई सभ्यताओं का असर देखने को मिलता है। तुरतुक गांव बौद्धों के गढ़ लद्दाख में है, लेकिन यहां कि ज्यादातर आबादी मुसलमानों की है। इन लोगों पर तिब्बत और बौद्धों का गहरा प्रभाव है। माना जाता है कि ये सभी इंडो-आर्यनों के वंशज हैं। मूल रूप से ये लोग बाल्टी भाषा बोलते हैं, लेकिन इनका खानपान और संस्कृति साझा है। इतनी खूबसूरत जगह होने के बावजूद तुरतुक लंबे समय तक विकास से दूर रहा। यहां की सड़कें बेहद संकरी हैं और कई जगह सफर करना काफी मुश्किल हो जाता है।

भारत का सबसे जहरीला सांप, जिसके काटने पर नहीं होता दर्द, लेकिन जिंदा नहीं बचता कोई

सांपों का नाम सुनते ही ज्यादातर लोगों के दिमाग में सबसे पहले कोबरा का ख्याल आता है। फन फैलाए कोबरा को दुनिया के सबसे खतरनाक सांपों में गिना जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि भारत में एक ऐसा सांप भी मौजूद है, जो कोबरा से भी कई गुना ज्यादा खतरनाक माना जाता है? इस सांप का नाम है कॉमन करैत। इसे साइलेंट किलर यानी चुपचाप हमला करने वाला सांप कहा जाता है, क्योंकि इसका काटना कई बार इंसान को दर्द तो नहीं देता, लेकिन इसका जहर शरीर के अंदर तेजी से असर दिखाना शुरू कर देता है। बारिश का मौसम शुरू होते ही देश के कई हिस्सों में कॉमन करैत का खतरा बहुत ज्यादा बढ़ जाता है। यह सांप अक्सर खेतों, गांवों और घरों के आसपास दिखाई देने लगता है। सबसे डरावनी बात यह है कि यह रात में ज्यादा सक्रिय रहता है और सो रहे लोगों के करीब तक पहुंच जाता है।

कॉमन करैत भारत के सबसे जहरीले सांपों में से एक है। इसका जहर न्यूरोटॉक्सिक होता है, यानी यह सीधे इंसान के नर्वस सिस्टम पर हमला करता है। कई बार इसके काटने पर न दर्द होता है, न सूजन और न ही कोई बड़ा निशान दिखाई देता है। यही वजह है कि लोग शुरुआत में इसे गंभीरता से नहीं लेते। लेकिन कुछ घंटों बाद ही शरीर में जहर फैलने लगता है। पीड़ित को पेट दर्द, उल्टी, कमजोरी और सांस लेने में दिक्कत होने लगती है। अगर समय पर इलाज न मिले तो सांस रुकने से मौत भी हो सकती है। कॉमन करैत दिन के मुकाबले रात में ज्यादा सक्रिय होता है। यह चुपके से घरों, खेतों और बस्तियों में घुस जाता है। कई बार यह बिस्तर, चटाई या फर्श पर सो रहे लोगों के पास पहुंच जाता है। इसका काटना इतना हल्का होता है कि कई लोगों को पता ही नहीं चलता कि उन्हें सांप ने काट लिया है। सुबह तक जहर शरीर में काफी फैल चुका होता है और तब तक हालत गंभीर हो सकती है। यही कारण है कि इसे साइलेंट किलर भी कहा जाता है। मानसून यानी बारीश के मौसम के दौरान खेतों और बिलों में पानी भर जाता है। ऐसे में करैत जैसे सांप सूखी और सुरक्षित जगहों की तलाश में घरों और गोदामों की तरफ आने लगते हैं। इस मौसम में चूहे और छोटे जीव भी ज्यादा बाहर निकलते हैं, जो करैत का मुख्य भोजन होते हैं। इसी वजह से यह इंसानों के आसपास ज्यादा दिखाई देने लगता है। मध्य प्रदेश, बिहार और भी भारत के कई गांवों में बारिश के दौरान यह सांप घरों, लकड़ी के ढेर, टूटे-फूटे सामान, गमलों और दीवारों की दरारों में छिपा हुआ मिल जाता है।

यूपी सरकार की भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस की नीति का बज रहा ढोल

» बाबू पर 50 लाख गबन का आरोप, आखिर किसके संरक्षण में चलता रहा खेल

कानपुर में 20 साल से बिना योग्यता के कर रहा है नौकरी

प्रांजुल मिश्रा/4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कानपुर। भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस की बात करने वाली यूपी की भाजपा सरकार की कथनी करनी में बड़ा अंतर हैं। ऐसा उसके विभागों के कारनामों में दिखाई देता है। योग्य युवाओं को रोजगार देने और व्यवस्था में पारदर्शिता लाने के बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं। लेकिन कानपुर के पुरियां गांव स्थित श्रीआस्तिक मुनि इंटर कॉलेज का मामला इन दावों पर कई बड़े सवाल खड़े कर रहा है। आरोप है कि कॉलेज के प्रधान लिपिक सुरेश कुमार बाजपेई करीब 20 वर्षों से बिना आवश्यक टंकण यानी टाइपिंग योग्यता और निर्धारित अर्हताओं के पद पर बने हुए हैं। इतना ही नहीं, ऑडिट रिपोर्ट में उनके ऊपर करीब 50 लाख रुपये के गबन का आरोप भी बताया जा रहा है।

अब सवाल यह है कि जिस प्रदेश में लाखों युवा नौकरी के लिए फॉर्म भरते-भरते ओवरएज हो रहे हैं, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में वर्षों खपा रहे हैं, वहां एक व्यक्ति बिना जरूरी योग्यता के दो दशक तक नौकरी कैसे करता रहा? क्या शिक्षा विभाग को इसकी जानकारी नहीं थी? अगर नहीं थी, तो यह लापरवाही है और अगर थी, तो फिर कार्रवाई क्यों नहीं हुई? शिकायतकर्ताओं का आरोप है कि जब भी इस मामले को उठाया गया, तब कथित तौर पर शिकायत करने वालों और प्रबंधतंत्र के खिलाफ ही शिकायतों और दबाव की रणनीति अपनाई गई। नतीजा यह रहा कि विवाद बढ़ता गया, लेकिन कार्रवाई आगे नहीं बढ़ी। लेकिन यहां भी एक बड़ा सवाल खड़ा होता है। अगर सुनवाई अब पूरी हुई है, तो पिछले 20 वर्षों में क्या हो रहा था? क्या दो दशक कार्रवाई के लिए पर्याप्त समय नहीं थे? यह मामला सिर्फ एक प्रधान लिपिक की नौकरी या कथित वित्तीय अनियमितता तक सीमित नहीं है। यह पूरे शिक्षा विभाग की निगरानी व्यवस्था पर सवाल खड़ा करता है। क्योंकि बिना विभागीय जानकारी और निगरानी के कोई व्यक्ति इतने लंबे समय तक पद पर बना रहे, यह बात आसानी से लोगों के गले नहीं उतर रही। अब जनता के बीच चर्चा है कि यह सिर्फ प्रशासनिक लापरवाही का मामला है या फिर इसके पीछे किसी के संरक्षण और कथित मिलीभगत की कहानी भी छिपी हुई है? फिलहाल, निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि क्या इस मामले में भी भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति जमीन पर दिखाई देगी या फिर यह मामला भी फाइलों के ढेर में दबकर रह जाएगा।

“मै कॉलेज का पूर्व प्रबंधक हूं। मैने बाबू के खिलाफ शासन में शिकायत की कि इनकी नियुक्ति नियमों के खिलाफ हुआ है। इनमें योग्यता नहीं है और फिर भी काम लिया जा रही है यही नहीं उनका प्रमोशन कर दिया गया। मैने न्याय के लिए जिला विद्यालय निरीक्ष के सामने अपनी बात रची हे उम्मीद है न्याय मिलेगा।

नीरज तिवारी (शिकायतकर्ता)

शिक्षा विभाग पर लापरवाही का आरोप

मुझे आए अभी कुछ दिन हुए है। बाबू बूढ़े हैं उन्हे कुछ कार्य नहीं आते हैं तो दूसरे बाबू काम करते हैं। जो भी आरोप है वो पुराने प्रधानाचार्य के समय का है। जिला विद्यालयक निरीक्षक दोनों पक्षों को सुन रहे हैं।

प्रधानाचार्य

“जिला विद्यालय निरीक्षक यानी डीआईओएस का कहना है कि दोनों पक्षों की सुनवाई पूरी हो चुकी है और तथ्यों के आधार पर जल्द निर्णय लिया जाएगा।

डीआईओएस, प्रवीण कुमार तिवारी

मान सरकार ने पंजाब की महिलाओं के साथ धोखा किया : ढिल्लों

» पंजाब बीजेपी प्रमुख ने सीएम मान को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब बीजेपी प्रमुख केवल सिंह ढिल्लों ने कहा कि पंजाब सरकार को राज्य की हर महिला को 51हजार रुपये देने चाहिए। यह रकम पिछले चुनावों से पहले किए गए वादे के तहत दी जाने वाली आर्थिक मदद में देरी के लिए है। इसमें आप के सत्ता में रहने के दौरान हर महीने के लिए 1हजार रुपये शामिल हैं।

मुख्यमंत्री भगवंत मान ने बुधवार को महिलाओं के लिए अपनी सरकार की मासिक आर्थिक सहायता योजना - मावां धियां सत्कार योजना - शुरू की और कहा कि आप ने 22 के विधानसभा चुनावों से पहले दी गई अपनी आखिरी चुनावी गारंटी पूरी कर ली है। इस योजना के तहत, सामान्य श्रेणी की महिलाओं को हर महीने 1 हजार रुपये मिलेंगे, जबकि अनुसूचित जाति की महिलाओं को 1,5 हजार रुपये मिलेंगे। मान ने कहा कि इस अहम पहल के तहत 40 लाख से ज़्यादा महिलाओं का रजिस्ट्रेशन हो चुका है। पत्रकारों से बात करते हुए, राज्य बीजेपी प्रमुख ढिल्लों ने कहा कि मान सरकार ने पंजाब की महिलाओं के साथ धोखा किया है। ढिल्लों ने कहा कि हम मांग करते हैं कि सरकार तुरंत 51हजार रुपये ट्रांसफर करे। यह रकम पंजाब में आप के 51 महीनों के शासन के दौरान बनती है। यह मांग आप प्रमुख अरविंद केजरीवाल द्वारा 21 नवंबर, 2021 को मोगा में केजरीवाल दी तीजी गारंटी, महिलावां नू वधाइयां नाम के कार्यक्रम में दी गई तीसरी गारंटी के आधार पर की जा रही है। पंजाब बीजेपी नेता विनीत जोशी के साथ मौजूद ढिल्लों ने इस स्कीम को लागू करने में हुई देरी को ऐतिहासिक धोखा बताया।

भारत और इंग्लैंड के बीच दूसरा टी-20 मैच आज

» सैमसन पर जारी रह सकता है भरोसा, वैभव को अभी करना पड़ सकता है इंतजार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मैनचेस्टर। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज का दूसरा मुकाबला आज खेला जाएगा। दोनों टीमों के बीच पहला मैच बारिश की भेंट चढ़ गया था। लेकिन संजू सैमसन और तिलक वर्मा का फ्लॉप शो जारी रहा था। इससे अब एक बार फिर इस चर्चा को बल मिल गया है कि क्या टीम प्रबंधन कोई कड़ा फैसला लेगा या 15 साल के वैभव सूर्यवंशी का इंतजार जारी ही रहेगा। अगर दूसरे टी20 मैच में भी टीम प्रबंधन सैमसन को मौका देता है तो फोकस इस पर रहेगा कि वह सूर्यवंशी को डेब्यू का मौका दिए जाने की बढती मांग के बीच अपनी उपयोगिता साबित कर पाते हैं या नहीं।

भारत की टी20 विश्वकप में खिताबी जीत के सूत्रधार रहे सैमसन को कम से कम एक साल तक मौका दिया जा सकता था, लेकिन अब जबकि भारतीय क्रिकेट को सूर्यवंशी के रूप में एक असाधारण प्रतिभाशाली क्रिकेटर मिल गया है, ऐसे में सैमसन के लिए गलती की कोई गुंजाइश नहीं रह गई है। वहीं मोर्केल ने संकेत दिए हैं कि टीम प्रबंधन 15 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी के टीम में शामिल होने के उत्साह के बावजूद संजू और अभिषेक शर्मा पर अपना भरोसा बनाए रखेगा। दूसरे टी20 मुकाबले से पहले उन्होंने कहा कि अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों का समर्थन करना जरूरी है। सैमसन के अलावा तिलक वर्मा को भी मध्यक्रम में तेज खेलना होगा। स्पिनरों के आने के बाद वह तेजी से रन नहीं बना पाते हैं। स्पिनरों की मददगार ओल्ड ट्रैफर्ड की पिच पर गेंदबाजी में किसी बदलाव की संभावना नहीं है। यानी भारत एक बार फिर तीन स्पिनर और दो विशेषज्ञ तेज गेंदबाजों के साथ उतर सकता है।

इंग्लैंड ने टीम में किये दो बदलाव

मैनचेस्टर। भारत के खिलाफ मैनचेस्टर में शनिवार को खेले जाने वाले दूसरे टी20 मुकाबले के लिए इंग्लैंड ने अपनी प्लेइंग इलेवन का एलान कर दिया है। टीम ने पहले मैच की तुलना में दो बदलाव किए हैं। तेज गेंदबाज जोश टंग को टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण का मौका मिला है, जबकि जोफ्रा आर्चर की भी टीम में वापसी हुई है। आर्चर और तेज गेंदबाज जोश टंग को हाल ही में न्यूजीलैंड के खिलाफ खेले गए आखिरी टेस्ट मैच में शामिल होने के कारण सीरीज के पहले मैच में आराम दिया गया था। वहीं, साकिब महमूद और ल्यूक वुड को इस मुकाबले के लिए बाहर कर दिया गया है।

हरियाणा के मतदाता सूची से किसी भी पात्र मतदाता का नाम नहीं कटने देंगे : राव नरेंद्र

» प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष ने भाजपा को चेताया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने कहा कि मतदाता सूची के एसआईआर को लेकर कांग्रेस पूरी तरह गंभीर। इस प्रक्रिया की निगरानी के लिए पार्टी ने हाई लेवल कमेटी गठित की है ताकि किसी भी पात्र मतदाता का नाम सूची से न कटे और फर्जी मतदाताओं को शामिल न किया जा सके। वह पलवल जिला कांग्रेस कार्यालय में प्रेस वार्ता में बोल रहे थे।

कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष ने आरोप लगाया कि बिहार और पश्चिम बंगाल में एसआईआर के दौरान बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम हटाए गए जिससे कई लोग अपने मताधिकार से वंचित रहे। हरियाणा में पूरी प्रक्रिया निष्पक्ष और पारदर्शी ढंग से होनी चाहिए। उन्होंने नीट पेपर लीक प्रकरण को लेकर केंद्र सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि लगातार पेपर लीक की घटनाओं ने युवाओं का भविष्य दांव पर लगा दिया है। 12 वर्षों में भाजपा शासन के दौरान 90 से अधिक पेपर लीक के मामले सामने आए हैं और शिक्षा व्यवस्था पर माफियाओं का प्रभाव बढ़ा है।

बीआरएस के समय कर्जे में डूबा था तेलंगाना

» पिछली सरकार राज्य पर 8.21 लाख करोड़ रुपये का कर्ज छोड़ गई थी: विक्रमार्क

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हैदराबाद। तेलंगाना के डिप्टी सीएम और वित्त मंत्री भट्टी विक्रमार्क ने विपक्षी पार्टी भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) पर तीखा हमला किया। उन्होंने आरोप लगाया कि के. चंद्रशेखर राव की पिछली सरकार राज्य पर 8.21 लाख करोड़ रुपये का कर्ज छोड़ गई है। उन्होंने सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड से 40 लाख टन कोयला गायब होने के आरोपों की विजिलेंस जांच कराने की भी घोषणा की।

तेलंगाना सचिवालय में मंत्रियों पोन्नम प्रभाकर और अड्लुरी लक्ष्मण कुमार के साथ एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, भट्टी ने राज्य के वित्तीय प्रबंधन को लेकर वरिष्ठ बीआरएस नेताओं टी. हरीश राव और केटी रामा राव के आरोपों को खारिज कर दिया। विपक्ष पर गोएबेल्स-शैली के प्रचार में शामिल होने का आरोप लगाते हुए, भट्टी ने कहा कि बीआरएस के एक दशक के शासन के बाद कांग्रेस सरकार को भारी वित्तीय बोझ विरासत में मिला था। उन्होंने दावा किया कि हालांकि मौजूदा सरकार ने सत्ता संभालने के बाद से 1.77 लाख करोड़ रुपये का कर्ज लिया है, लेकिन उसने पिछली सरकार के समय लिए गए कर्ज का मूलधन और ब्याज मिलाकर 208,681 करोड़ रुपये चुकाए भी हैं। भट्टी के अनुसार, जब फिस्कल रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड बजट मैनेजमेंट फ्रेमवर्क के तहत लिए गए कर्ज, राज्य की गारंटी वाले कॉर्पोरेशन लोन, कर्मचारियों के बकाया और बिजली वितरण कंपनियों की देनदारियों को शामिल किया जाता है, तो कुल देनदारी बढ़कर 8,21,651 करोड़ रुपये हो जाती है। हरीश राव के इस दावे पर सवाल उठाते हुए कि बीआरएस सरकार ने सिर्फ़ 3 लाख करोड़ रुपये का कर्ज़ लिया था, भट्टी ने पूछा कि अगर यह दावा सही है, तो राज्य पर कर्ज़ चुकाने का इतना बड़ा बोझ क्यों है। डिप्टी सीएम ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने शुरू में निवेशकों और वित्तीय संस्थानों के बीच तेलंगाना की साख बनाए रखने के लिए राज्य की आर्थिक स्थिति का खुलासा नहीं किया था। हालांकि, उन्होंने कहा कि विपक्ष की आलोचना बढ़ने के बाद सरकार ने आंकड़े सार्वजनिक करने का फ़ैसला किया।

तेहरान में मातम, दुनिया ने रोकी सांसें

माहौल गमगीन, अटैक के खतरे के बीच आयतुल्ला खामेनेई का विदाई समारोह शुरू, 9 जुलाई तक चलने वाले इस समारोह में 100 से ज्यादा देशों के प्रतिनिधि शामिल

समारोह में 2 करोड़ लोगों के पहुंचने की उम्मीद, 28 फरवरी 26 को अमेरिकी-इजरायली हमले में ईरान के सुप्रीम लीडर अली खामेनेई परिवार के कई सदस्यों के साथ हुए थे शहीद

- भारतीय प्रतिनिधि मंडल ने पेश की खिराजे अकीदत
- भारत से महबूबा मुफ्ती, सलमान खुर्शीद, कल्बे जव्वाद समेत अनेकों धार्मिक गुरू पहुंचे हैं ईरान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

तेहरान की सड़कों पर सन्नाटा भी शोर भी

नई दिल्ली। आज ईरान में गोलियों की गूंज नहीं बल्कि ईरान आसुओं के समंदर से लबरेज है। ईरान के सार्वोच्च धर्मगुरू अयातुल्ला अली खामेनेई जिनकी शहादत जंग के शुरूआती दिनों में हो गयी थी उनकी विदाई के का महासमर शुरू हो चुका है। 4 जुलाई से 9 जुलाई तक चलने वाले इस समारोह में 100 से ज्यादा देशों के प्रतिनिधि शामिल हो रहे हैं। समारोह में 2 करोड़ लोगों के पहुंचने की उम्मीद है।

तेहरान के ग्रैंड मोसाला में 3 जुलाई को दिवंगत अली खामेनेई और उनके परिवार के कई सदस्यों के ताबूत आखिरी दर्शन के लिए रखे गए। खामेनेई के पार्थिव शरीर को ईरानी झंडे में लपेटा गया है। ताबूत पर या हुसैन लिखा हुआ लाल झंडा रखा गया है। शोक अवधि में उनके पार्थिव शरीर को ईरान के साथ ही इराक के भी कई शहरों में ले जाया जाएगा। अली खामनेई के इस विदाई महासमर को देखकर हर कोई एक सवाल पूछ रहा है कि क्या यह सिर्फ एक नेता की अंतिम यात्रा है या फिर मध्य पूर्व की राजनीति का वह मोड़ जहां से दुनिया का नया इतिहास लिखा जाएगा? करोड़ों आंखें नम हैं लेकिन खुफिया एजेंसियों की निगाहें भी उतनी ही चौकन्नी क्योंकि मातम के इस समंदर के नीचे भू-राजनीति का सबसे बड़ा तूफान पल रहा है।

तेहरान की सुबह आज सूरज की रोशनी से नहीं करोड़ों नम आंखों की चमक से जागी है। सड़कों पर सन्नाटा भी है और शोर भी। कहीं दुआओं की धीमी आवाज़ें हैं कहीं सीने पर पड़ते मातमी हाथों की गूंज तो कहीं ऐसी खामोशी जो किसी भी भाषण से ज्यादा असरदार है। हवा में गुलाबजल की महक घुली है लेकिन उसी हवा में बारूद की आशंका भी तैर रही है। शहर के हर मोड़ पर काले परचम लहरा रहे हैं और हर चेहरे पर एक ही एहसास लिखा दिखाई देता है आज ईरान सिर्फ अपने एक रहबर को विदा नहीं कर रहा बल्कि अपने इतिहास का एक पूरा दौर अपने कंधों पर उठाए चल रहा है। ग्रैंड मोसल्ला के विशाल प्रांगण में रखे ताबूत तक पहुंचने की हर कोशिश आंसुओं की एक नई कहानी बन जाती है। कोई खामोश खड़ा है कोई दुआ में हाथ उठाए हुए है कोई ताबूत को देखकर अपने आंसू रोक नहीं पा रहा। ऐसा लगता है जैसे वक्त ने अपनी चाल धीमी कर दी हो और पूरी दुनिया कुछ क्षणों के लिए तेहरान की धड़कनों के साथ सांस लेने लगी हो। यह दृश्य सिर्फ एक अंतिम विदाई का नहीं बल्कि उस भावनात्मक भूचाल का है जिसकी गूंज सीमाओं से कहीं आगे तक सुनाई दे रही है।लेकिन इस मातम के समंदर के ऊपर जितनी भावनाएं तैर रही हैं, उसके नीचे उतनी ही बेचैन परछाइयां भी घूम रही हैं। दुनिया की बड़ी खुफिया एजेंसियों की निगाहें इस जनसैलाब पर टिकी हैं। सुरक्षा के अभूतपूर्व घेरे आसमान में लगातार निगरानी हर आने जाने वाले काफिले पर पैनी नजर। यह सब इस बात की गवाही देता है कि शोक के इस महासागर में भी खतरे की लहरें पूरी तरह थमी नहीं हैं। एक चिंगारी करोड़ों भावनाओं के बीच कैसी आग लगा सकती है इसका अंदाजा हर सुरक्षा एजेंसी को है। इसलिए यह सिर्फ विदाई समारोह नहीं बल्कि दुनिया के सबसे संवेदनशील सुरक्षा अभियानों में बदल चुका है।

अलग-अलग देशों से आए प्रतिनिधिमंडल भी मौजूद

इसी भीड़ के बीच दुनिया के अलग अलग देशों से आए प्रतिनिधिमंडल भी मौजूद हैं। हर हाथ में फूल हैं लेकिन हर राजधानी के मन में अपने अपने राजनीतिक समीकरण भी। भारत का प्रतिनिधिमंडल भी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है। यह केवल संवेदना का क्षण नहीं बल्कि कूटनीति का वह मौन संवाद भी है जहां शब्दों से ज्यादा महत्व उपस्थिति का होता है। तेहरान में हर मुलाकात हर हाथ मिलाना और हर मौन प्रार्थना आने वाले समय के नए समीकरणों का संकेत बन सकती है। क्योंकि इतिहास गवाह है कि कुछ अंतिम यात्राएं केवल किसी व्यक्ति की विदाई नहीं होतीं वह आने वाले युग की प्रस्तावना भी लिख जाती हैं। तेहरान की यह भीगी हुई शाम भी शायद उसी प्रस्तावना का पहला पन्ना है।

तेहरान में भारत ने ईरान के दिवंगत सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह खामेनेई को दी श्रद्धांजलि

भारत के विदेश राज्य मंत्री पबित्रा मार्गेरिटा और बिहार के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल सेवानिवृत्त सैयद अता हसनैन ने ईरान के दिवंगत सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह सैयद अली खामेनेई के अंतिम संस्कार समारोह में भारत की ओर से श्रद्धांजलि दी। विदेश राज्य मंत्री पबित्रा मार्गेरिटा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा है कि बिहार के राज्यपाल सैयद अता हसनैन और मैंने तेहरान में अयातुल्लाह सैयद अली खामेनेई के अंतिम संस्कार समारोह में भारत का प्रतिनिधित्व किया। हमने भारत सरकार और भारत के लोगों की ओर से श्रद्धांजलि दी।भारत के विदेश मंत्रालय ने कहा कि इस दौरान भारत का उच्च-स्तरीय प्रतिनिधित्व दोनों देशों के बीच मजबूत सभ्यतागत संबंधों को दिखाता है। इससे लोगों के बीच संबंध और राजनीतिक व आर्थिक सहयोग को और मजबूती मिलती है। पांच मार्च को भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने नई दिल्ली में ईरान के दूतावास जाकर संवेदना पुस्तिका पर हस्ताक्षर किए थे और अयातुल्लाह अली खामेनेई के निधन पर भारत सरकार की ओर से शोक व्यक्त किया था। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक्स पर पोस्ट करते हुए बताया कि विदेश सचिव ने ईरानी दूतावास जाकर भारत सरकार और जनता की ओर से संवेदना व्यक्त की।

बिहार में बैकफुट पर आई भाजपा सरकार

लालू प्रसाद यादव और राबड़ी देवी की सुरक्षा हो गई बहाल

- अब जेड श्रेणी के सुरक्षा घेरे में रहेंगे दोनों पूर्व सीएम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार में सियासी घमासान मचने के बाद आखिकार बिहार की बीजेपी सरकार बैकफुट पर आई है। सम्राट सरकार ने लालू प्रसाद यादव और राबड़ी देवी की सुरक्षा बहाल करते हुए उन्हें फिर से जेड श्रेणी की सुरक्षा प्रदान की है, जिसमें बुलेटप्रूफ गाड़ी भी शामिल है।

यह फैसला उनकी सुरक्षा में पहले की गई कटौती के बाद हुए तीखे राजनीतिक विवाद के मद्देनजर आया है, जहां राजद ने इसे विपक्षी नेताओं को निशाना बनाने का आरोप लगाया था। इस कदम से सुरक्षा को लेकर चल रहे राजनीतिक आरोपों पर कुछ हद तक विराम लग सकता है। राज्य सरकार द्वारा समीक्षा के बाद इस जोड़े की जेड + सुरक्षा काफी कम कर दी गई थी। इस फैसले से ज़बरदस्त राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया था। सांकेतिक विरोध दर्ज कराने के लिए, उन्होंने उन सरकारी सुरक्षाकर्मियों को वापस कर दिया था जो उनकी सुरक्षा के लिए तैनात किए गए थे।राजद ने आरोप लगाया था कि सुरक्षा में कटौती का मकसद विपक्षी नेताओं को निशाना बनाना था। पार्टी का दावा था कि बिहार में बीजेपी सरकार, विपक्षी नेताओं की सुरक्षा कम करके उनके कद को घटाना चाहती थी। बाद में बिहार सरकार ने कहा कि ये बदलाव खतरे के आकलन के आधार पर की गई नियमित समीक्षा का हिस्सा थे। इस कदम के विरोध में लालू यादव के छोटे बेटे, पूर्व डिप्टी सीएमऔर बिहार विधानसभा में विपक्ष के मौजूदा नेता तेजस्वी यादव ने भी सरकार से मिली सुरक्षा लौटा दी थी।

हालांकि, अधिकारियों ने साफ़ किया कि उनकी सुरक्षा व्यवस्था में कोई बदलाव नहीं किया गया था। लालू यादव और राबड़ी देवी को जेड कैटेगरी की सुरक्षा देने का बिहार सरकार का फ़ैसला ऐसे समय में आया है जब यह जोड़ा एक निजी घर में रहने जा रहा है। गुरुवार को राबड़ी देवी पटना में 10, सर्कुलर रोड स्थित सरकारी बंगले को छोड़कर अपने घर चली गईं। यह बंगला लगभग दो दशकों तक उनका आवास और RJD का कैंप ऑफिस रहा था।

यूपी में आंधी-बारिश का अलर्ट

दिल्ली में बारिश से मौसम सुहाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली में 2 जुलाई से मानसून की एंट्री के बाद भी गर्मी और उमस झेल रहे दिल्लीवालों को शनिवार दिन में हुई बारिश ने कुछ राहत दी है। बारिश पूर्वी दिल्ली के कुछ इलाकों में हुई है, जिससे आसपास के क्षेत्रों का मौसम सुहाना हो गया है। वहीं आईएमडी ने अलर्ट जारी कर बताया है कि अगले दो घंटे में दिल्ली समेत हरियाणा और पश्चिमी यूपी के कई शहरों में तेज हवा चलने के साथ ही गरज-चमक के साथ हल्की या मध्यम बारिश हो सकती है।

- मुंबई व गुजरात में भारी बारिश से तबाही

उधर मुंबई और गुजरात में जोरदार बारिश से जीवन अस्तव्यस्त हो गया है। मौसम विभाग द्वारा जारी अलर्ट में बताया गया है कि दिल्ली और एनसीआर के लोनी देहात, हिंडन एयरफोर्स स्टेशन, बहादुरगढ़, गाजियाबाद, इंदिरापुरम, छपरौला, नोएडा आदि में कई स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश के साथ-साथ गरज-चमक और 30-40 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चलने की पूरी संभावना है। इसके साथ ही अगले कुछ घंटों के अंदर दिल्ली के कई हिस्सों सहित हरियाणा के यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, करनाल और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सहारनपुर, गंगोह, देवबंद, नजीबाबाद, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, खतौली में हल्की बारिश, तेज हवाएं चलने की काफी संभावना है।

सोनम वांगचुक की भूख हड़ताल का सातवां दिन

- सेहत बिगड़ने से 5 किलो वजन कम हो गया है : सीजेपी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने शनिवार को जंतर-मंतर पर अपनी भूख हड़ताल जारी रखी, जो उनके विरोध का सातवां दिन था। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) का दावा है कि उनकी सेहत तेजी से बिगड़ रही है और उपवास शुरू करने के बाद से उनका वजन पांच किलोग्राम कम हो गया है।

सीजेपी ने परीक्षा में कथित अनियमितताओं-जिनमें प्रमुख राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षाओं से जुड़े मुद्दे भी शामिल हैं-को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफ़े की अपनी मांग दोहराई है। फाउंडर अभिजीत दिपके ने एक्स पर कहा कि वांगचुक की हालत हर दिन बिगड़ती जा रही है और सवाल उठाया कि मंत्री को उनके पद से क्यों नहीं हटाया गया। दिपके ने कहा कि सोनम सर का वजन 5 किलो कम हो गया है और उनकी सेहत हर दिन बिगड़ती जा रही है। धर्मेंद्र प्रधान को हटाने के लिए प्रधानमंत्री और कितना इंतजार करेंगे? उन्होंने आगे कहा कि पीएम मोदी के लिए धर्मेंद्र प्रधान इतने अहम क्यों हैं कि 20 छात्रों की मौत के बावजूद वे उन्हें हटाने से इनकार कर रहे हैं? एक और पोस्ट में दिपके ने चेतावनी दी कि अगर विरोध प्रदर्शन के दौरान वांगचुक को कुछ भी हुआ, तो सरकार इसके लिए जिम्मेदार होगी। उन्होंने कहा क अगर सरकार ने तेजी से काम नहीं किया और प्रधान के खिलाफ कार्रवाई नहीं की, तो सोनम सर को कुछ भी होने पर वही जिम्मेदार होगी। तेजी से बिगड़ती सेहत के बावजूद, उन्होंने साफ कर दिया है कि जब तक कार्रवाई नहीं होती, वे अपनी भूख हड़ताल खत्म नहीं करेंगे।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी **4** पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा**
द्वारा **आस्था प्रिंटर्स**, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक- संजय शर्मा**